निकालने वाले—
सेक्रेट्री,
हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,
145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

पहली बार
गांधी जयन्ती
2 अक्तूबर 1952

छापने वाले—
मैनेजर
नया हिन्द प्रेस,
145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

दो शब्द

कोई एक साल हुआ कुदसिया ज़ैदी ने मुझ से इस किताब के लिये जो बच्चों के वास्ते लिखी गई है चन्द शब्द लिखने की फ़रमाइश की थी. मैंने उज्र किया कि मेरे पास वक़्त नहीं है और ऐसी फ़रमाइश पूरी करने को जी भी नहीं चाहता. मगर वह आग्रह करती रहीं कि देर सवेर से कुछ लिख ज़रूर दीजिये. मेरे लिये इनकार करना मुशकिल होता गया. मैंने देखा कि उन्होंने यह छोटी सी किताब सच्चे दिल से लिखी है. वह इसे सिर्फ़ एक किताब नहीं समझती हैं. यह भी ज़ाहिर था कि उनके लिये गांधीजी की कहानी एक बहुत ही महत्व की और प्यारी चीज़ है.

इस किताब का मसौदा मेरे पास एक साल रहा. इसे देख कर बार बार याद आता रहा कि मुझ से एक फ़रमाइश की गई है और इसे पूरा करने में मुझे संकोच है. आख़िरकार मैं इस मसौदे को अपने साथ सोनामर्ग ले गया जहां से कश्मीर के दरिया सिन्ध की घाटी शुरू होती है. वहां ऊंचे पहाड़ों और बरफ़ानी घाटियों के पड़ोस में "बैठ कर मैंने गांधी बाबा" की कहानी को फिर देखा.

मुझे आख़िर इस के बारे में कुछ लिखने में संकोच क्यों था ? यह बात मेरी अपनी समझ में भी नहीं आती. बस इतना जानता हूँ कि जब कभी गांधीजी का ख़याल आता है तो मुझे अपनी कमियां और त्रुटियां बहुत महसूस होने लगती हैं. गांधीजी के बारे में कुछ लिखना चाहता हूँ तो धीरे धीरे यक़ीन हो जाता है कि इस मज़मून का हक़ अदा न कर सकूँगा. हममें से वह लोग जिन्हें गांधीजी की शख़सियत के साए में रहना और परवरिश पाना नसीब हुआ और जिन्होंने उनकी महानता और उनकी उस शक्ति के जलवे देखे जो तरह तरह से ज़ाहिर हुई थी वह अपनी कैफ़ियत दूसरों से बयान नहीं कर सकते. हममें से हर एक के दिल पर अलग और ऐसा गहरा असर है कि हमारी सारी ज़िन्दगी उसके रंग में रंग गई है. अब इस असर को जिसे अपना ही दिल जानता है बयान कैसे किया जाय. जो शब्द लिखिये रोज़मर्रा का और हलका मालूम होता है. जो बात कहिये बे-हक़ीक़त लगती है, और तबियत बेचैन रहती है कि मतलब अदा नहीं हो सका.

मगर फिर यह भी है कि इस नसल के लोग जिन्होंने गांधीजी को देखा था, उनके पांव छुए थे और उनकी शख़सियत के किसी न किसी पहलू से वाक़िफ़ हो गए थे चल देंगे, बल्कि हमारे सामने चले जा रहे हैं. गांधीजी की याद ताज़ा रखने के लिये कुछ

यादगारें रह जाएंगी, कुछ लेख और कुछ किताबें और वह रिवायतें जो हर क़ौम के इतिहास में बड़ा महत्त्व रखती हैं.

गांधीजी को हम से जुदा हुए साढ़े चार बरस हो गए हैं. अब उनकी जगह हिन्दुस्तान के इतिहास ही में नहीं उसके पुरानों और कथाओं में है. वह उन शानदार शख़सियतों में शामिल हो गए हैं जो इनसानियत के रास्ते को रोशन करने, दिलों में शराफ़त का नूर और इनसान में एक नई जान डालने के लिये जन्म लेती रहती हैं.

अच्छा हो कि हमारे लड़के और पोते और परपोते बचपन ही में उनकी कहानी को सुनें. इसमें युद्ध की कहानी की सी कैफ़ियत है. और अगरचे हमारे बच्चों को अब गांधीजी को जीते जागते देखना नसीब नहीं हो सकता मगर उन्हें गांधीजी की ज़िन्दगी के हालात और उनकी तालीम का कुछ ज्ञान हो जायगा और उस प्राचीन हिन्दुस्तानियत को भी समझ सकेंगे जिसकी एक आला मिसाल गांधीजी की शख़सियत थी और उस सन्देश को सुन सकेंगे जो हिन्दुस्तान अपने सन्तों और सूफ़ियों की ज़बानी दुनिया को पहुँचा रहा है और जो गांधीजी का सन्देश था.

मुझे ख़ुशी है कि यह किताब लिखी गई है और मुझे उम्मीद है कि यह कामयाब होगी.

नई दिल्ली

१ सितम्बर १९५२ जवाहरलाल नेहरू

अपनी बात

महात्मा गांधी के जीवन, उनके विचारों और उनके आदर्शों का बेगम क़ुदसिया ज़ैदी के दिल और दिमाग़ पर बहुत ही गहरा असर पड़ा है. वह महात्मा गांधी की सच्ची क़द्रदां और अनन्य भक्त हैं. उन्होंने यह किताब कहानी की शकल में लिखी है. एक मां अपने बच्चे को गांधी बाबा की कहानी सुना रही है. भाषा बहुत ही सुन्दर, मुहावरेदार और बोल चाल की हिन्दी है. हमें विश्वास है कि यह देश के लाखों बच्चों को महात्मा गांधी के जीवन और उनके बलिदान का सच्चा पाठ पढ़ा सकेगी और बरसों पढ़ाती रहेगी. किताब बहुत दिनों से छप कर पड़ी हुई थी. पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उसके लिये दो शब्द लिखने का वादा किया था. उसी इन्तज़ार में यह रुकी रही. अब उनके दो शब्दों के साथ यह छोटी-सी पर मारके की किताब गांधी जयन्ती के इस शुभ अवसर पर हिन्दी संसार और ख़ास कर देश के बच्चों को भेंट की जा रही है.

इलाहाबाद
2 अक्तूबर 1952

सुन्दरलाल
सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

गांधी बाबा

हरि अपने घर लौटा तो शाम के छै बज रहे थे. उसने देखा कि सारा घर सुनसान है. न दादा जी बैठे हुक्का गुड़गुड़ा रहे हैं और न माताजी रसोई में रोटी बना रही हैं. इतना सन्नाटा देख कर हरि को डर सा लगने लगा. उसने माताजी को इधर उधर ढूंढा तो देखा कि वह एक कोने में बैठी रो रही हैं.

हरि ने इससे पहले अपनी माँ को कभी रोते नहीं देखा था. उन्हें बिलखते देख कर उसका दिल भर आया और वह भी रोने लगा. थोड़ी देर बाद उसने भर्राई हुई आवाज़ में पूछा—"अम्मा, क्या हुआ, रो क्यों रही हो?" जब उन्होंने रुक रुक कर कहा—"गां..., गांधी...बाबा...मर गए." तब हरि का दिल धक से रह गया. उसने कहा—"अम्मा! कैसे मर गए गांधी बाबा? मैं तो कल ही पिताजी के साथ उनकी प्रार्थना में गया था. जब मैंने जाकर उनके पांव छुए, तब उन्होंने बड़े प्यार से मेरे गाल को छूकर कहा, 'क्योंजी, अब तो तुम दंगा नहीं करते?' अम्मा! कल तक तो बिलकुल अच्छे थे गांधी बाबा!" यह सुन कर हरि की मां और फूट फूट कर रोने लगी. हरि ने सिसकियाँ लेते हुए फिर पूछा—"अम्मा, वह कैसे मर गए?"

माँ—"हरि! मैं क्या बताऊं कैसे मर गए, किसी नीच पापी ने उन्हें गोली मार दी."

हरि—"माताजी! भला उसका गांधी बाबा ने क्या बिगाड़ा था. वह तो इतने अच्छे थे कि उतने अच्छे तो दादा भी नहीं."

मां—"हाँ बेटा! यह ऐसी ही दुनिया है. यहाँ सच बोलने वाले और भगवान के भक्त बुरे लोगों को नहीं भाते. सच्ची बात सदा कड़वी लगती है. बेटा! लोग उसे सुनने को तैयार नहीं होते."

हरि—"अम्मा! आप मुझे पिताजी की बन्दूक दे दें. मैं अभी उस पापी को जान

से मार डालूंगा जिसने हमारे गान्धी बाबा को हम से छीन लिया ." हरि जोश में आकर बोला .

माँ—"नहीं, हरि ! यह बुरी बात है . गांधी बाबा ने हमें यही तो सिखाया है कि किसी की जान लेना पाप है . तुमने केवल उनको देखा ही देखा है, पहचाना नहीं . आओ, मैं तुमको बताऊँ कि वह कौन थे . तुम्हें बड़ा अचम्भा होगा, हरि ! जब मैं तुम्हें यह बताऊँगी कि गांधी बाबा बचपन में बिलकुल तुम्हारे ही जैसे लड़के थे, पर उन्होंने अपनी अनेक अथक कोशिशों से अपने आपको कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया . प्रेम और सेवा के बल, वह गौतम बुद्ध की तरह महात्मा बन गए . वह इस देश के सबसे बड़े सेवक और बेताज के बादशाह थे . वह यहाँ के चालीस करोड़ वासियों के दिलों पर राज करते थे . उनके सामने लोग सिर ही नहीं झुकाते थे, उनसे सच्चे दिल से प्रेम भी करते थे . इस देश का बड़े से बड़ा और छोटे से छोटा आदमी उन्हें अपना बाप समझता था और सब उन्हें बापू कहते थे, क्योंकि गांधी बाबा का दिल लोगों के दुख के साथ दुखता और उनके सुख के साथ सुखी होता था . वह ग़रीबों से बहुत प्रेम करते थे, उन्हीं की तरह रहते और उन्हीं की तरह खद्दर की एक धोती बांधते और खद्दर की एक चादर ओढ़ते थे . बकरी का दूध पीते थे और उबली हुई तरकारियाँ खाया करते थे . वह एक महात्मा थे; बेटा !"

हरि—"अम्मा ! और गांधी बाबा बच्चों से कितना प्रेम करते थे ! कभी उनको हँसाते, कभी उनसे अच्छी अच्छी बातें करते, कभी उनको साथ लेकर टहलने जाते; ऐसा मालूम होता था कि वह भी एक बच्चे हैं . अम्मा, मुझे शुरू से गांधी बाबा की कहानी सुनाइये".

माँ—"अच्छा बेटा ! जो जो मुझे याद आता जायगा सुनाती जाऊँगी . आज रसोई तो बनानी नहीं, खाना किससे खाया जायगा ! तुम्हारे दादाजी पड़ोस के एक घर में गए हैं कि रेडियो से कुछ और पता चले.. जब तक वे आएँ तब तक मैं तुमको बापू का हाल सुनाती हूँ कि इसी से कुछ दिल हलका हो" .

हरि की माँ ने बापू की अमर कहानी यूं शुरू की.

१
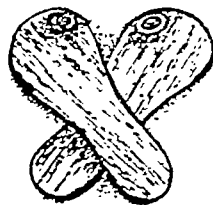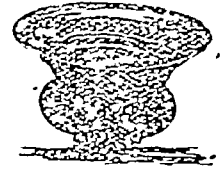
"बम्बई से उत्तर की तरफ़ काठियावाड़ के एक रजवाड़े का नाम पोरबन्दर है, वहाँ इसी नाम का एक बन्दरगाह है . वही उस रजवाड़े की राजधानी है . बरसों हुए जब तुम्हारे दादाजी तुम से भी छोटे थे, पोरबन्दर में एक कर्मचन्द गांधी रहा करते थे. वह थे तो जात के बनिये पर उनके कुनबे के लोग अच्छे पढ़े लिखे थे . उस घराने में तीन पीढ़ियों से बाप के बाद बेटा काठियावाड़ के रजवाड़ों में दीवान होता आया था .

"कर्मचन्द बहुत सच्चे, बहादुर और दानी थे . लोग उनकी बड़ी इज़्ज़त करते थे और उनके कहने को पत्थर की लकीर मानते थे. मिज़ाज के कुछ कड़वे थे, इससे लोगों पर उनका बड़ा रोब था . वह काठियावाड़ के राजों महाराजों के झगड़े निपटाया करते थे . सदा सच बोलने और खरी बात कहने के कारन लोग उन्हें आदर की निगाह से देखते थे .

"कर्मचन्द कई साल पोरबन्दर में रहे, फिर वहाँ का हाल बिगड़ने पर राजकोट चले गए. राजकोट भी काठियावाड़ की एक रियासत है . बैल गाड़ी में पोरबन्दर से राजकोट जाने में पाँच दिन लगते थे . राजकोट के राजा जिन्हें वहां के लोग ठाकुर साहब कहते हैं कर्मचन्द को बहुत मानते थे . कुछ बरस में ही उन्होंने कर्मचन्द को अपना दीवान बना लिया .

"एक मामले में बेचारे कर्मचन्द का भाग बड़ा खोटा था . उन्होंने एक के बाद एक तीन शादियाँ कीं. पर, ईश्वर की मरज़ी, तीनों बीवियां परलोक सिधारीं . चालीस बरस की उमर में उन्होंने चौथी शादी पुतली बाई से की. उसे भगवान् ने एक बेटी और तीन बेटे दिये .

"कर्मचन्द और पुतली बाई अपने धर्म में पक्के और बहुत नेक थे . दोनों रोज़ मंदिर जाकर पूजा करते और फूल चढ़ाते . कर्मचन्द से कहीं बढ़कर पुतली बाई धर्म की पाबन्द थीं . कोई दिन ऐसा न था कि जिस दिन वह मंदिर न जातीं . त्योहारों पर व्रत रखतीं . अगर कभी बीमार हो जातीं तो भी व्रत न छोड़तीं . व्रत के सिलसिले में वे अपने ऊपर तरह तरह के बन्धन लगा लेतीं . जैसे बरसात के दिनों में जब तक सूरज को आँख से न देख लेतीं, खाना न खातीं . हरि ! तुम जानते तो हो कि बरसात के मौसम में सूरज कई कई दिन तक बादलों में मुँह छिपाए रहता है . अकसर ऐसा होता कि वह किसी काम में होतीं और उनके बच्चे आँगन में खड़े आसमान की तरफ़ आँख लगाए रहते कि कब सूरज बादलों में से निकले और कब वे अपनी माँ को बुलाकर लाएं . जैसे ही सूरज को देखते, भागे भागे

जाते और मां को ख़बर करते. मगर अक्सर माँ के आते आते बरसात का चंचल सूरज आँख मिचौली सी खेलता हुआ बदली के पीछे छिप जाता . जब वह आतीं और सूरज को न देख पातीं तो यह कहती हुई वापिस लौट जातीं–'भगवान की मरज़ी है कि मैं आज भी कुछ न खाऊं.' फिर उसी तरह घर के काम धन्दों में लग जातीं . पुतली बाई बहुत दीनदार होने के साथ साथ बड़ी समझदार भी थीं . राजकोट के महल की सब रानियां उनकी बड़ी इज़्ज़त करतीं और राजमाता तो उनके बिना पूछे कोई काम ही न करती थीं .

"पुतली बाई के चारों बच्चों में से सबसे बड़े और सबसे छोटे में छै साल की छुटाई बड़ाई थी . सबसे छोटा आज से कोई अस्सी बरस उधर १८६९ ई० में पैदा हुआ था . देखने में बहुत सुन्दर तो न था, पर न जाने क्यों कर्मचन्द, पुतली बाई और तीनों बच्चे उसे देखकर फूले न समाते . सब बच्चे बार बार नन्हें को देखने आते, नन्हा आँखें खोले, अँगूठा मुँह में डाले सब को तका करता .

"नन्हें के पिताजी ने एक शुभ दिन देख कर उसका नाम मोहनदास रक्खा और काठियावाड़ के रिवाज के अनुसार बाप का नाम कर्मचन्द और घराने का नाम गांधी, साथ मिल गया . इस तरह बच्चे का पूरा नाम मोहनदास कर्मचन्द गांधी पड़ गया .

"मोहनदास पाँच बरस का हुआ तब उसे स्कूल भेजा गया. सबक़ तो वह किसी न किसी तरह याद कर ही लिया करता था पर पहाड़े उसे किसी सूरत याद न हो पाते. इधर याद किये उधर फिर साफ़.

"मोहन दास की उमर कोई सात बरस की होगी जब कर्मचन्द को नौकरी के सिलसिले में पोरबन्दर छोड़ कर राजकोट आना पड़ा. पुराना घर छूटने का सब बच्चों को बड़ा रंज था. पर राजकोट पहुंचते ही दो चार दिन में वे अपने पुराने घर को भूल गए और नए घर में चैन से रहने लगे.

"मोहनदास की माताजी पुराने ढंग की थीं. छूत छात का बड़ा ख़याल रखती थीं. मोहनदास को हमेशा बताती रहतीं कि अगर किसी अछूत को छू लो तो फ़ौरन नहा धोकर कपड़े बदल डालो. मोहनदास के घर में उनके भंगी का लड़का ओका सफ़ाई करने आया करता. अगर मोहनदास कभी भूल कर उसे छू लेता तो फ़ौरन उसकी माताजी उसको नहलवातीं. मोहनदास नहाने को तो नहा लेता पर यह बात उसकी समझ में न आती कि ओका नीच और अछूत कैसे हो सकता है. धीरे धीरे उसका दिल चाहने लगा कि मैं भी किसी तरह अछूत बन जाऊँ और फिर अछूत को ब्राह्मण के बराबर ऊँचा कर दिखाऊँ.

"मोहनदास यों तो हर तरह मामूली बच्चों जैसा था पर उसमें ख़ास बात यह थी कि वह सदा सच बोलता था चाहे सच बोलने के कारन उसे कुछ ही क्यों न सहना पड़े. एक दिन की बात है. मोहनदास अंग्रेज़ी का परचा कर रहा था. एक अंग्रेज़ साहब इम्तहान लेने आए थे. किसी शब्द के हिज्जे मोहनदास ने ठीक न लिखे. मास्टर जी ने इशारों से मोहनदास को समझाना चाहा कि वह अपने साथ वाले लड़के की कापी से नक़ल करले. जब मास्टर जी इशारे करते करते तंग आगए तो उन्होंने अपने जूते की नोक बेचारे मोहनदास के पाँव पर इस ज़ोर से रक्खी कि ग़रीब बिलबिला उठा. पर उसके साफ़ और सच्चे दिल में यह बात आ ही न सकी कि मास्टर साहब उसे नक़ल करने का इशारा कर रहे थे."

हरि—"अम्मा! मास्टर साहब भी ख़ूब थे कि लड़कों को नक़ल करने को उकसाते थे. हमारे मास्टर साहब हमें नक़ल करते देख लें तो कान पकड़ कर बाहर निकाल दें."

माँ—"हां बेटा! ठीक है पर यह तो देखो कि मोहनदास ने कितनी ईमानदारी से काम लिया."

हरि—"अच्छा, माताजी! फिर क्या हुआ?"
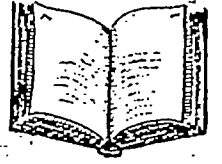
माँ—"मोहनदास पर दो कहानियों का बड़ा असर पड़ा. उनमें से एक राजा हरिश्चन्द्र की कहानी थी जिसका नाटक मोहनदास बार बार जाकर देखा करता था और दूसरी श्रवणकुमार की. पहली कहानी यह है—

राजा हरिशचन्द और साधु

"कहते हैं हजारों बरस पहले हमारे देश में एक बहुत सच्चा और दानी राजा था. एक बार उसकी नगरी में बड़ा भारी काल पड़ा. राजा ने अपना सब कुछ बेच बेच कर प्रजा की सेवा में लगा दिया और ख़ुद कौड़ी कौड़ी को मोहताज हो गया. ईश्वर की करनी, देवताओं को भी उसी घड़ी राजा के धर्म और सच्चाई को परखने की सूझी। एक देवता साधु का भेस बदल कर राजा से भीख माँगने आया. घर में जो कुछ था राजा ने लाकर भिखारी को दे दिया. भिखारी ने फिर सवाल किया, तब राजा ने अपने दास दासी बेच कर दाम भिखारी के हाथ पर रख दिये.

"भिखारी ने फिर कहा—'महाराज! मेरा काम इतने में नहीं चलेगा. तुम कहो तो पास ही जो डोम रहता है उससे जाकर भीख माँगूँ, पर मुझे शरम आती है कि राजा के दर का भिखारी डोम के सामने हाथ फैलाए.' इस बात को सुनते ही राजा हरिश्चन्द्र ख़ुद साधु के साथ उस डोम के घर गया और उसने अपने आप को डोम के पास गिरवी रख कर साधु की माँग पूरी की. साधु ने तो अपने घर की राह ली और डोम ने राजा को मरघट पर नौकरी बजाने भेज दिया. वहाँ वह चिता के लिये आग देता था और जो लोग मुरदे लेकर जलाने आते उनसे टैक्स लिया करता था.

मरघट पर हरिश्चन्द्र अपनी रानी से टैक्स माँगते हुए

"कुछ दिन बाद राजा हरिश्चन्द्र का इकलौता बेटा रोहिताश्व मर गया. उसे जलाने के लिये रानी मरघट पहुँचकर चिता तैयार कर रही थी. राजा ने बढ़ कर टैक्स माँगा. रानी ने आँखों में आँसू भर कर कहा—'स्वामी! मेरे पास तो तन की इस धोती के सिवा और कुछ भी नहीं'. राजा का दिल हिल गया, पर उसके पाँव नहीं डगमगाए. वह हिम्मत से काम लेकर बोला—'रानी! मैं मजबूर हूँ. मेरे स्वामी का हुकुम है कि चिता के लिये आग देने से पहले टैक्स वसूल करलो. यह धर्म निबाहना मेरे लिये ज़रूरी है.' जैसे ही रानी ने धोती के अंचल पर हाथ डाला वैसे ही राजा और रानी की सच्चाई, उनका व्रत और हिम्मत देख कर देवता लोग काँप उठे. वह फ़ौरन उड़न खटोले पर बैठ कर आ पहुँचे. उन्होंने राजा के

बेटे में फिर से जान डाल दी और राजा, रानी और बेटा तीनों को डोम समेत बैकुन्ठ ले गए .

"बेटा हरि ! यह कहानी मोहनदास के दिल में घर कर गई, उसका जी चाहता था कि परमात्मा उसे हिम्मत दे कि वह भी सच्चाई की कसौटी पर हरिश्चन्द्र की तरह पूरा उतरे. बड़े होकर मोहनदास ने सचमुच सच्चाई के लिये अपनी जान की बाज़ी लगादी और कसौटी पर ऐसा खरा उतरा कि दुनिया दंग रह गई ."

कहानी सुनाते सुनाते हरि की माता की आवाज़ भर्रा गई, थोड़ी देर बाद रुक कर फिर उन्होंने यूं कहना शुरू किया—

"दूसरी कहानी श्रवण कुमार की थी जिसे पढ़ कर मोहनदास ने लोगों की सेवा करनी सीखी . श्रवण कुमार के माँ बाप दोनों बूढ़े और अंधे थे. वह उन्हें हर जगह बहँगी

श्रवण कुमार बहंगी में मां बाप को लिये हुए

में उठाए उठाए फिरता . मेहनत मजदूरी करके वह उनका पेट पालता और हर तरह सेवा करता . क़िस्मत का लिखा, दशरथ महाराज एक दिन जंगल में शिकार खेलने निकले . श्रवण नदी के किनारे अपने माँ बाप के लिये पानी भर रहा था . दशरथ ने दूर से

श्रवण को हरिण समझ कर उस पर तीर चला दिया, बेचारा घायल होकर दर्द से तड़पने और कराहने लगा.. पर उस वक्त भी उसे अपने बूढ़े माता पिता का विचार सता रहा था. मरने से पहले उसने दशरथ ही के हाथ उन्हें पानी भिजवाया और कहा, जब पानी पिला चुको तब मेरे मरने की ख़बर सुनाना, दशरथ ने ऐसा ही किया. जब वह पानी पी चुके, तब

राजा दशरथ श्रवण कुमार पर तीर चला रहे हैं.

दशरथ ने श्रवण कुमार के मरने की सूचना दी. बेचारे, बूढ़े और कमज़ोर तो थे ही, इतना रोए और इतना रंज किया कि वहीं ठन्डे हो गए. दशरथ ने श्रवण कुमार की चिता के साथ ही साथ उसके माँ बाप की चिताएँ भी तैयार कीं और तीनों को आग के सुपुर्द कर दिया."

हरि—"अम्मा फिर दशरथ जी का क्या हुआ ?

माँ—"बेटा ! दशरथ भी अपने बेटे के वियोग में मरे."

हरि—"अच्छा अम्मा, गांधी बाबा ने यह कहानी पढ़कर क्या किया ?"

माँ—"बालक मोहन ने यह कहानियाँ सुनकर हरिश्चन्द्र की तरह सदा सच बोलने और श्रवण कुमार की तरह दुखियों की सेवा करने की ठान ली. हरिश्चन्द्र और श्रवण कुमार अब हमेशा उसकी आँखों के सामने रहने लगे. श्रवण कुमार ने तो माँ बाप ही की सेवा की, पर मोहनदास ने बड़े होकर करोड़ों इन्सानों की सेवा में अपना तन मन धन सब कुछ न्योछावर कर दिया. चालीस करोड़ इन्सान, जिसमें मर्द भी थे और औरतें भी, बच्चे भी थे और बूढ़े भी, मुसलमान भी थे और हिन्दू भी, ब्राह्मण भी थे और हरिजन भी, राजा भी थे और भिखारी भी, सब उसके लिये एक थे, उसके दिल में सब के लिये एक सा प्रेम था."

हरि मूरत बना कहानी सुन रहा था. माता जी को यह देख कर बड़ा आनन्द हुआ, कि उस पर इतना असर हो रहा है, जैसे एक एक बात उसके दिल में उतर रही हो. उन्होंने उठ कर खिड़की बन्द की जिसमें से बड़ी ठंडी हवा आ रही थी और फिर कहना शुरू किया.

३
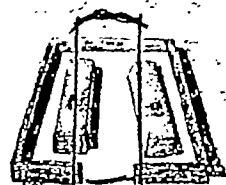
"मोहनदास के माता पिता ने उसकी शादी लड़कपन ही में, पोरबन्दर की एक लड़की, कस्तूरा बाई से कर दी थी . उस वक्त तो मोहन दास के मन में लड्डू फूट रहे थे कि शादी के बाद अच्छे अच्छे कपड़े पहनने को मिलेंगे और एक नई लड़की साथ खेलने को, पर जब मोहनदास बड़ा हो गया तब उसने लड़कपन की शादी को बुरा बताया . और हमेशा ऐसी शादियों के विरुद्ध रहे .

"विवाह होते ही मोहनदास ने बेचारी भोली भाली अबोध कस्तूरा बाई पर सख़्तियाँ करनी शुरू कर दीं—यहाँ मत जाओ, वहाँ मत जाओ, इस सहेली से मत मिलो, उससे मत मिलो . मोहनदास की इन उल्टी सीधी बातों से कस्तूरा बाई का नाक में दम आ गया . जितना वह कस्तूरा बाई को बेजा दबाना चाहता, उतना ही वह उसका मुक़ाबला करती . कई बार तो इन बातों पर इतनी खटपट हो जाती और खिंचाव इतना बढ़ जाता कि दोनों की बोल चाल तक बन्द रहती" .

हरि—"अम्मा, मोहनदास ऐसा क्यों करते थे ?"

माँ—"बात यह थी कि वह उस लड़ाई झगड़े ही को प्रेम की निशानी समझता था . शादी के झंझट में फँस कर भी मोहनदास का स्कूल जाना बन्द नहीं हुआ. इतना ही नहीं, ऊपर के दर्जों में पहुँच कर तो वह क्लास के होशियार लड़कों में गिना जाने लगा . उसने सदा यह प्रयत्न किया कि लोग उसे सच्चा और अपनी बात का धनी समझें . अगर कभी हँसी में भी कोई उसे झूठा कह बैठता तो उसके दिल पर बहुत चोट लगती और वह घंटों रोया करता था .

"मोहनदास को एक शौक़ यह भी था कि वह अपने भटके हुए साथियों को खींच कर सचाई और नेकी के सीधे रास्ते पर लाने की कोशिश करता था . कभी-कभी कामयाबी भी हो जाती थी . इसी शौक़ की वजह से लड़कपन में उसने एक बहुत ही बुरे और आवारा लकड़े से मित्रता करली . कस्तूरी बाई ने, यहाँ तक कि मोहनदास के माता पिता ने भी हज़ारों बार रोका कि वह उस लड़के से मिलना छोड़ दे, पर मोहनदास ने सुनी अनसुनी कर दी .

"उसका दोस्त खूब जानता था कि मोहनदास बड़ा डरपोक और दब्बू है, कभी अंधेरे कमरे में नहीं जाता पर चाहता यह है कि किसी तरह बड़ा बलवान् और बहादुर बन जाय . उसने मोहनदास से कहा—'मोहन ! बहादुर बनने का एक ही उपाय है और वह यह है कि तुम गोश्त खाना शुरू करदो . देखलो, अँग्रेज़ हिन्दुस्तानी से कहीं बढ़ कर हट्टा-कट्टा और बलवान् होता है और गोश्त खाने के कारण ही निर्बल हिन्दुस्तानियों पर राज करता है .' भोले-भाले और बहादुरी की धुन के मतवाले, मोहनदास ने इसे सच मान लिया और वह गोश्त खाने को तैयार हो गया .

"यह तो तुम जानते ही हो हरि, कि वैष्णव धर्म में गोश्त खाना मना है . मोहनदास गोश्त खाता तो कैसे खाता, उसके घर में तो गोश्त आता ही न था . बस उसके दोस्त ने यह तय किया कि वह मोहनदास की दावत करेगा, और उसके घरवालों से छुपाकर मोहनदास को गोश्त खिलाएगा .

"दावत के दिन शाम को मोहनदास अपने दोस्त के घर पहुँचा और सब खाना खाने बैठे . उसने हज़ार कोशिश की कि गोश्त की बोटी उसके गले से उतर जाय पर न उतरी . आख़िर बेचारे को क़ै हो गई और वह मजबूर होकर उठ खड़ा हुआ . घर पहुंच कर मोहनदास का बुरा हाल हुआ, सोते जागते उसे ऐसा लगता जैसे बकरी उसके पेट के अन्दर मिमिया रही है . उस के बाद भी मोहनदास ने कई बार माँस खाने की कोशिश की, पर उसे कभी माँस नहीं भाया .

"माँस की दावतों के बाद मोहनदास सदा देर से घर पहुँचता और हर बार उसे अपने घर वालों से झूठ बोलना पड़ता . दो चार बार तो देर से घर आने की झूठी सच्ची वजह बतादी, पर एक दिन उसे एकाएक सूझा कि माता पिता से झूठ बोल कर और उन्हें धोखा देकर अगर मैं बहादुर और बलवान् हो भी जाऊँ तो किस काम का . यह सोचते ही उसने ठान लिया कि माँस कभी नहीं खाऊँगा और हमेशा सच बोलूँगा चाहे मैं कितना ही कमज़ोर और डरपोक क्यों न रह जाऊँ . माता पिता से झूठ बोल कर और उन्हें धोका देकर निडर और बलवान् होना बेकार है ."

हरि ने निडर हो कर पूछा—"तो फिर माँ वह इतने निडर और बहादुर कैसे बन गए ?"

माँ—"झूठ बोलना तो मोहनदास ने छोड़ दिया . पर निडर और बहादुर बनने की लगन उसके दिल में लगी रही . मोहनदास के घर में रंभा नाम की एक बुढ़िया दासी थी, वह जानती थी कि मोहनदास को अँधेरे से कितना डर लगता है . रंभा ने एक दिन

बातों-बातों में मोहनदास ने कहा—'जब भी, तुम्हें अंधेरे में डर लगे या कोई कठिनाई आन पड़े तब तुरन्त राम का नाम जपने लगो, इस नाम के लेने से तुम्हारा डर जाता रहेगा ।"

हरि—"अम्मा, तो क्या सचमुच राम नाम जपने से उनके दिल का डर जाता रहा ?"

माँ—"इस नाम में बड़े गुण हैं, अगर कोई भगवान् को सच्चे दिल से पुकारे तो भगवान् उसकी अवश्य सुनते हैं ।"

हरि—"मैं भी राम नाम जपा करूंगा, मुझे भी तो अंधेरे कमरे में जाते डर लगता है ।"
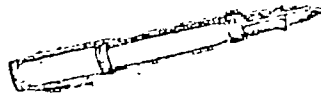
"माँस खाने की धुन तो मोहन ने अपने बड़ों की ख़ातिर छोड़ दी पर अब जल्दी से बड़ा होने की लगन उसे दिन रात सताती . जब बच्चों को बड़ा होने की लालसा सताती है तो उन्हें तरह तरह की सूझती है . वह बड़ों की नकलें उतार कर बड़े होने का आशा पूरी करते हैं . जब कभी मोहनदास अपने चाचा को मुँह से धुयें के बादल उड़ाते देखता तो उसका भी दिल मचलता कि उनकी तरह सिगरेट पीकर मुँह और नाक में से धुआं निकाले . मोहनदास ने ऐसा ही करने की ठानी और यह तय किया कि वह और उसका एक दोस्त सिगरेट पिया करेंगे . पर पीते तो कहां से पीते जेब में तो फूटी कौड़ी भी न थी . जब मोहनदास के चाचा उठकर चले जाते तब मोहनदास और उसका दोस्त चुपके से आते और इधर उधर पड़े हुए सिगरेट के अधजले टुकड़े उठा ले जाते और छिप छिप कर ख़ूब पिया करते . मगर थोड़े दिनों के बाद जब इस से उनकी तसल्ली न हुई तब फिर नौकरों की जेब में से पैसे निकाल कर सिगरेट मोल लेने लगे . लेकिन इस तरह छुप छुप कर सिगरेट पीने से उनका जी प्रसन्न न होता . एक दिन दोनों बहुत उदास बैठे सोच रहे थे कि यह जीना भी कोई जीना है कि हम खुल कर बड़ों की तरह सिगरेट भी न पी सकें . इसका विचार करते ही उनका और भी जी घुटने लगा . दोनों के मन में समाई कि चलो चल कर कहीं दोनों प्राण दे दें . यह ठान कर उन्होंने जाकर धतूरे के बीज जमा किये और इस 'शुभ काम' के लिये शाम का समय चुना . वे बीज खाने को ही थे कि ख्याल आया कि अगर यह खाकर भी न मरे तो क्या होगा . यह सोचते ही उन्होंने मरने का विचार छोड़ दिया . और सिगरेट न पीने का प्रण किया ."

हरि — "अम्मा, मोहनदास ने बड़े होकर तो सिगरेट पिया ही होगा ."

अम्मा—"नहीं बेटा वह दिन सो आज का दिन, उसने कभी सिगरेट मुंह से नहीं लगाया .

"जान देने का विचार भूलते ही उन दोनों के दिल पर से एक बोझ सा उतर गया और ज़िन्दगी उन्हें फिर पहले ही जैसी सुहावनी लगने लगी .

"एक दिन मोहनदास घर में बैठा कुछ लिख पढ़ रहा था कि उसका भाई घबराया हुआ आया, और उसके पास बैठ कर चुपके चुपके कान में कुछ कहने लगा. बात यह थी कि मोहनदास के भाई पर बीस पच्चीस रुपए किसी के उधार हो गए थे, वह उस रकम को चुकाने के लिये अपने भाई की मदद चाहता था. मोहनदास ने बहुत सोचा और बहुत सोचने के बाद एक उपाय निकाला. मौक़ा पाकर मोहनदास चुपके से गया और रात के समय अपने दूसरे भाई के बाजूबन्द में से थोड़ा सा सोना उड़ा लाया. और उसे बेच कर उधार चुका दिया."

हरि—"अम्मा! आप तो कहती हैं चोरी करना बुरी बात है, फिर मोहनदास ने चोरी क्यों की?"
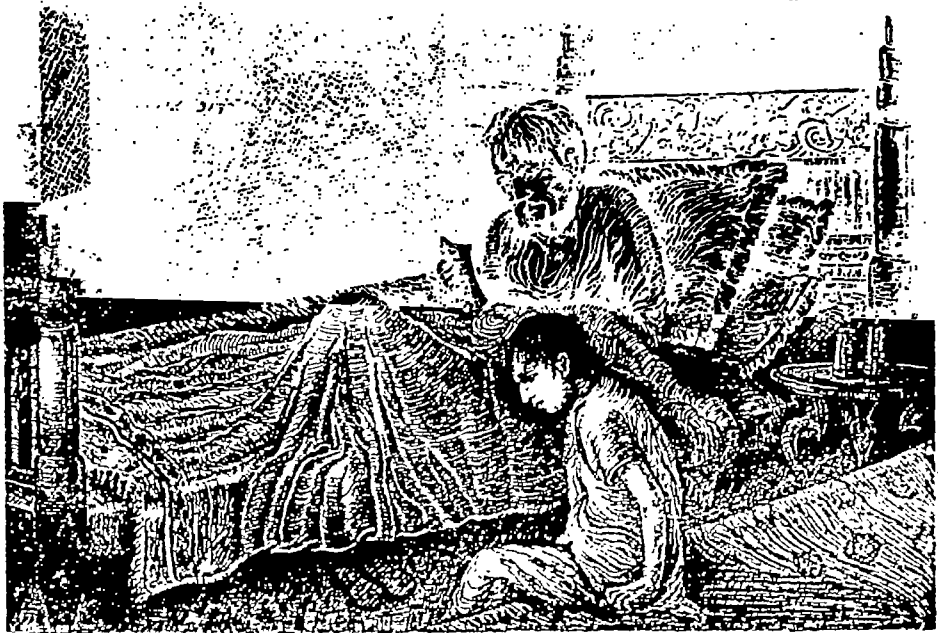
मोहनदास के पिता उसकी चिट्ठी पढ़ रहे हैं.

माँ—"बेटा हरि! भूले से ऐसे काम सब ही बच्चे कर बैठते हैं. पर नेक बच्चे वह हैं जो भूल करने के बाद पछताएँ और फिर उम्र भर वैसी भूल न करें."

मोहनदास ने एक भाई के कारण दूसरे भाई की चोरी करने को तो करली पर अब उसके दिल को चैन कहाँ, समझ में न आता था कि करे तो क्या करे. बहुत सोच विचार करने के बाद उसने चुपके से अपने पिता जी को एक चिट्ठी लिखी जिसमें चोरी का

हाल था . चोरी न करने का वचन और सजा का निवेदन था, और यह भी लिखा था कि पिताजी जितनी कड़ी सजा चाहें दें, पर अपना दिल न दुखाए. मोहनदास के पिता इन दिनों बीमार थे वह सारे दिन लेटे रहते थे. मोहनदास ने चिट्ठी लेजाकर उनके हाथ में दे दी और उनके पास ही पलंग पर चुपचाप बैठ गया .

"मोहनदास के पिताजी ने बैठ कर चिट्ठी पढ़ी तो उनकी आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई . ज्यों ज्यों आँसू गिरते थे मोहनदास के दिल का पाप जैसे धुलता जा रहा था . मोहनदास पर उन अनमोल आँसुओं का इतना प्रभाव हुआ कि उसका जीवन बदल गया और वह पहले से कहीं बढ़ कर अच्छा लड़का बन गया ."

हरि—"अम्मा, मोहनदास के पिताजी रोये क्यों ? उन्होंने मोहनदास को पीटा क्यों नहीं ?"

माँ—"बेटा ! मोहनदास की सच्चाई और हिम्मत देख कर उसके पिताजी का दिल भर आया, अगर वह मोहनदास को मारते तो उस पर वह असर न होता जो उन्होंने मोहनदास को मारे पीटे बिना स्वंय अपने दिल को दुखाकर पैदा किया . मोहनदास पर उस प्रेम का असर मारपीट से कहीं अधिक हुआ .

"मोहनदास की ज़िन्दगी में अहिंसा का यह पहला उपदेश था . बड़े हो जाने पर उसने इसी अहिंसा के बल पर अँग्रेज़ों लड़े बिना, उनको उनके घर पहुंचा दिया और अपने देश को स्वतन्त्र कर लिया .

"दो चार दिन में चोरी की बात आई गई हुई . हाँ, इसके बाद सेइतना अवश्य हुआ कि मोहनदास के पिताजी उसे पहले से भी अधिक चाहने लगे, और क्यों न चाहते, वह था भी तो बड़ा सच्चा और नेक लड़का ."

हरि—"अम्मा ! मैं भी अब सदा सच बोला करूंगा, तो मुझे भी पिताजी पहले से ज्यादह प्यार करने लगेंगे ."

माँ—"हाँ बेटा ! एक तुम्हारे पिताजी क्या, सभी प्यार करेंगे ."

हरि—"अच्छा अम्मा . फिर क्या हुआ ?"

माँ—"भगवान की करनी, उन्हीं दिनों मोहनदास के पिताजी बहुत बीमार रहने लगे . सब घरवाले उनकी देख भाल में लगे रहते . मोहनदास उनकी सेवा सब से अधिक करता था . वह स्कूल के बाद जल्दी जल्दी घर आता और सारे वक्त अपने पिताजी के पास बैठा रहता . उनको दवा पिलाता, कपड़े बदलवाता और घंटों बैठ कर उनके पाँव दबाया

करता . एक रात को पाँव दबाने के बाद वह किसी काम से अपने कमरे में गया ही था कि नौकर ने आकर दरवाज़ा खटखटाया और ख़बर दी कि पिताजी चल बसे . मोहनदास को उस समय उनके पास न रहने का रंज मरते दम तक रहा ."

हरि—"हाय ! हाय ! कितना रोया होगा बेचारा !"

मां—"हां बेटा ! और आज स्वयं उसके लिये सारा हिन्दुस्तान बल्कि सारी दुनिया रो रही है ."

५
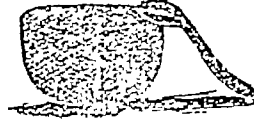
"अठारह वर्ष की उम्र में मोहनदास ने दसवीं कक्षा पास कर ली, उसके पिताजी के एक बड़े पुराने मित्र के कहने पर मोहनदास के बड़े भाई ने उसे बैरिस्ट्री पास करने विलायत भेज दिया. उन दिनों लोग समझते थे कि विलायत में रह कर धर्म का पालन नहीं हो सकता. इसीलिये मोहनदास के घर वाले उसे विलायत भेजने पर कठिनता से राज़ी हुए.

"वहाँ भेजने से पहले उसकी माता ने मोहनदास से तीन वचन लिये. पहला यह, कि गोश्त नहीं खाऊँगा. दूसरा यह, कि शराब नहीं पियूँगा. और तीसरा यह, कि सब लड़कियों को अपनी बहन की तरह समझूँगा. मोहनदास ने सच्चे दिल से सब वचन दिये और अपनी माताजी, भाई और बड़ों का आशीर्वाद लेकर विलायत सिधारा.

"जाने से पहले मोहनदास ने बहुत से अंग्रेज़ी कपड़े सिलवाये, चमकदार जूते और रंग बिरंगी टाइयां खरीदीं. पहले पहल तो मोहनदास को टाई बांधने का ढंग न आता था पर जब बांधनी आ गई तो अंग्रेज़ी कपड़ों में टाई उसे सब से ज्यादह अच्छी लगती.

"जिस दिन जहाज़ अंग्रेज़ी बन्दरगाह में जाकर लगा, मोहनदास ने सोचा कि इंग्लिस्तान की भूमि पर पहली बार पांव रखने के लिये सब से बढ़िया कपड़े पहिनना आवश्यक है. तुरन्त बक्स खोल कर सफ़ेद फ़लालैन का सूट निकाला और बड़े ठाठ से उसे पहन कर जहाज़ से उतरा. अब जो आँख उठा कर देखता है तो इधर से उधर तक सब लोग गहरे रंगों के सूट पहने हुए हैं. वह अकेला सफ़ेद सूट पहने है, और सब उसे अचम्भे से देख रहे हैं. शर्म के मारे मोहनदास को पसीना आगया. ज्यों त्यों कर के होटल पहुंचा. दुर्भाग्यवश दूसरे दिन इतवार था. और दफ़्तर बन्द होने के कारन बंदरगाह से सामान नहीं आ सकता था. बेचारा मोहनदास तीन दिन तक वही सफ़ेद सूट पहने रहा पर जहाँ तक हो सका होटल से बाहर न निकला.

"विलायत में मोहनदास ने देखा कि फ़ैशन वाले सब लोग ऊँचा हैट पहनते हैं. उसे भी शौक़ चढ़ा कि वह भी ऊँचा हैट खरीदे. शर्मीला तो था ही, बड़ी हिम्मत कर के हैटवाले की दुकान पर पहुंचा और जो हैट सब से पहले नज़र आया उसी को खरीद कर

घर आ गया, घर आकर जो हैट पहना तो मालूम हुआ सिर से एक इंच भर बड़ा है, वह तो यों कहो कि उसके बड़े बड़े कान उस वक़्त उसके काम आ गये नहीं तो हैट खिसक कर नाक पर आ जाता और कुछ भी न सूझता ."

हरि—"अम्मा, छोटा सा लड़का बड़ा हैट पहन कर कैसा अजीब लगता होगा? मैं वहां होता तो अपने कैमरे से उसकी तस्वीर खींच लेता ."

मां—"हां बेटा, अजीब तो लगता ही होगा . दूसरे हिन्दुस्तानी लड़कों की तरह मोहनदास ने भी विलायत जाकर पहले दिल खोल कर खर्च किया . नाचना सीखा, वायलन बजाना सीखा, बढ़िया बढ़िया दुकानों से कपड़े सिलवाये, बड़ी बढ़िया सोने की घड़ी खरीदी, मतलब यह, कि जी भर कर रुपया फेंका . पर एक बात मोहनदास में बहुत अच्छी थी . वह सदा पाई पाई का हिसाब लिखता था . एक दिन मोहनदास को खयाल आया कि अगर मैं खेल तमाशों और दिखावे के कामों में लगा रहा, तो पढ़ूंगा कैसे और कब तक मेरे बड़े भाई मुझे रुपया भेजते रहेंगे . यह विचार आते ही मोहनदास ने अपने खर्च की फिहरिस्त निकाली और जो जो चीज़ें उसे मंहगी और निकम्मी लगीं उसने उन्हें छोड़ देने की ठान ली । जहाँ तक हो सका मोहनदास ने बसों में बैठना कम कर दिया . उसने सस्ता मगर सेहत के लिये अच्छा खाना पकाना सीखा और दो बड़े बड़े कमरों की जगह एक छोटे से कमरे में रहने लगा .

"अपनी पढ़ाई के साथ साथ विलायत में उसे दूसरे धर्मों की किताबें पढ़ने और समझने का भी मौका मिला . लड़कपन में उसके पिताजी के पास जैन, हिन्दू, बौद्ध, पारसी, ईसाई और मुसलमान सब आया करते थे और घंटों सब धर्मों के बारे में बातचीत हुआ करती थी . मोहनदास चुपचाप बैठा सब सुना करता था . तब ही से वह सब धर्मों को आदर की निगाह से देखता था . उसने लड़कपन ही से यह तय कर लिया था कि सच्चाई सब धर्मों की जड़ है और बिना सच्चाई, आदमी नेक नहीं बन सकता .

"विलायत ही में उसे रोगियों की सेवा करने की भी धुन सवार हुई . एक डाक्टर की मदद से उसने कोढ़ियों की देख-भाल करनी सीखी . थोड़े ही दिन के अन्दर वह इस काम में ऐसा होशियार हो गया कि देखने वालों को अचंभा होता था ."

हरि—"मां! इतनी जल्दी उसने यह काम कैसे सीख लिया?"

माँ—"बेटा! किसी बात की भी जी में लगन लग जाय, तो वह काम जल्दी आजाता है . फिर मोहनदास का दिल, गरीबों की तरह रह कर और दुखियों की सेवा करके बहुत प्रसन्न होता था .

"मोहनदास ने अपने बहुत से साथियों को पेरिस शहर की प्रशंसा करते सुना था, कि पेरिस शहर बहुत बड़ा, सुन्दर और साफ़ सुथरा है. उसके हिन्दुस्तान लौटने से कुछ महीने पहिले पेरिस में एक बहुत बड़ी नुमायश की तैयारियां हो रही थीं. उसने सोचा चलो एक ही बार में पेरिस का शहर और वहां की नुमायश दोनों देख लें. पेरिस में नुमायश मैदान के बीचों बीच लोहे का एक बहुत ऊंचा मीनार बनाया गया था. यह मीनार दिल्ली की कुतब की लाट से कोई तिगुना ऊँचा था. नुमायश देखने वाले मीनार पर जरूर चढ़ते थे. उसी मीनार में एक होटल भी था जहां लोग खाना खाते थे और वहीं बैठे बैठे नुमायश की सैर भी करते थे. मोहनदास ने भी मीनार का टिकट लिया और उसी होटल में बैठ कर खाना खाया.

"नुमायश देखने के बाद मोहनदास ने पेरिस की सब बड़ी बड़ी मशहूर जगहें देखी. सबसे अधिक उसे वहां के पुराने गिरजे पसन्द आये और नौतरदाम का गिरजा तो उसे बहुत ही अच्छा लगा."

हरि—"लोहे की ऊंची लाट भी उसे बहुत ही अच्छी लगी होगी?"

मां—"न जाने क्यों वही उसे पसन्द नहीं आई, मगर हां, पेरिस की पुरानी इमारतें उसे बहुत अच्छी लगीं."

मोहनदास ने बैरिस्टरी पास करने के बाद हिन्दुस्तान लौटने की तैयारी की. जुलाई के महीने में समुद्र के तूफ़ान और हवा का सामना करता हुआ उसका जहाज बम्बई में आकर रुका.

"बन्दरगाह पर उसके बड़े भाई उसे लेने आये थे. मोहनदास रास्ते भर अपनी माताजी से मिलने के लिये बेचैन था. पर जब बम्बई पहुँचकर उसने अपने भाई से सुना कि उसकी माता भगवान की शरण में पहुँच चुकी हैं और जब वह घर पहुँचेगा तो मां उसे गले लगाने और प्यार करने के लिये दरवाज़े पर खड़ी नहीं मिलेंगी, तो उसकी आंखों तले अंधेरा आ गया. पर मोहनदास दिल का बहुत पक्का था. आंसू पीकर रह गया और उफ़ तक न की."

हरि—"हाय, उससे कैसे चुप रहा गया, और कोई होता तो रो रो कर आंखें सुजा लेता."

मां—"पर वह और कोई थोड़े ही था, वह तो मोहनदास करमचन्द गांधी था."

६
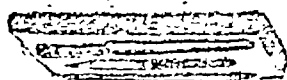
"मोहनदास के भाई ने उसके दफ़्तर के लिये पहले ही से एक मकान किराये पर ले रखा था . मोहनदास ने उस पर मोहनदास करमचन्द गांधी का बोर्ड लगा कर बैरिस्ट्री का काम शुरू कर दिया . पर उसका काम बम्बई में न चल सका . छै महीने की जी तोड़ मेहनत करने के बाद वहां का दफ़्तर बन्द करके वह राजकोट चला गया, और वहां जाकर दफ़्तर खोला . राजकोट में उसका काम अच्छा चल निकला पर वहां गांधी का दिल बिलकुल न लगा . वहां के लोगों में झूठ और मक्कारी देख देख कर उसका दिल उचाट हो गया .

"पोरबन्दर में गांधी घराने से, दादा अब्दुल्ला कम्पनी वालों का बहुत मिलना जुलना था . भगवान की करनी, उन्हीं दिनों दादा अब्दुल्ला कम्पनी का बहुत बड़ा मुक़दमा दक्खिनी अफ़रीका में चल रहा था . उन्होंने गांधी को उस मुक़दमे की पैरवी के लिये डरबन भिजवा दिया .

"गांधी-अर-र-नहीं अब गांधी जी, दक्खिनी अफ़रीका पहुँचे तो देखा कि वहां की दुनिया ही दूसरी है . वहां काले लोगों को फ़िरंगी (योरपीन) तरह तरह से तंग करते थे . हर हिन्दुस्तानी को, चाहे वह बैरिस्टर हो या सौदागर, मज़दूर हो या नौकर, 'कुली' कह कर पुकारते . और जो काले लोग सचमुच कुली का काम करते थे, उनके साथ तो जानवरों से भी बुरा व्यवहार किया जाता था .

"कोई काला आदमी किसी होटल में नहीं घुस सकता था, ठहरना तो दूर रहा वह सड़क की पटरी पर किसी गोरे आदमी के साथ नहीं चल सकता था . पटरी पर से धक्का देकर हिन्दुस्तानी को हटा देना एक मामूली बात थी . किसी हिन्दुस्तानी की मजाल नहीं थी कि वह किसी अंग्रेज़ के सामने पगड़ी पहन कर जा सके . वह रेल के डिब्बे या घोड़ा गाड़ी में अंग्रेज़ के साथ नहीं बैठ सकता था . इसी तरह की और भी बहुत सी बातें थीं ."

हरि—"अम्मा, तो फिर गांधी जी का वहां रहना मुश्किल हो गया होगा ?"

मां—"मैं तुम्हें उनकी वहां की एक कहानी सुनाती हूँ जिससे तुम्हें पता चलेगा कि गांधी जी को अफ़रीका में किन किन मुसीबतों का सामना करना पड़ा .

"एक बार गांधी जी डरबन से प्रीटोरिया जाने के लिये किराये की घोड़ा गाड़ी में सवार होना चाहते थे, कि गाड़ी के गार्ड ने उन्हें आकर रोका और गाड़ी के अन्दर अंग्रेज मुसाफ़िरों के साथ बिठाने से इन्कार कर दिया . गांधी जी को किसी न किसी तरह प्रीटोरिया पहुंचना ज़रूरी था, इसलिये वह कोचवान के पास बाहर वाली सीट पर बैठ गये . गार्ड स्वयं गाड़ी के अन्दर बैठा और गाड़ी चल दी . थोड़ी देर में गार्ड फिर आया और गांधी जी को कोचवान के पांव के पास सीट से नीचे बैठने का हुक्म दिया . उन्होंने वहां बैठने से इन्कार कर दिया . गार्ड भला काले आदमी की बात क्या सुनता, उसने आव देखा न ताव, बेचारे गांधी जी पर मुक्कों और गालियों की बौछार शुरू कर दी ; और फिर हाथ पकड़ कर गाड़ी से नीचे गिराने की कोशिश करने लगा . गांधी जी भी पूरी हिम्मत से गाड़ी का हैंडिल
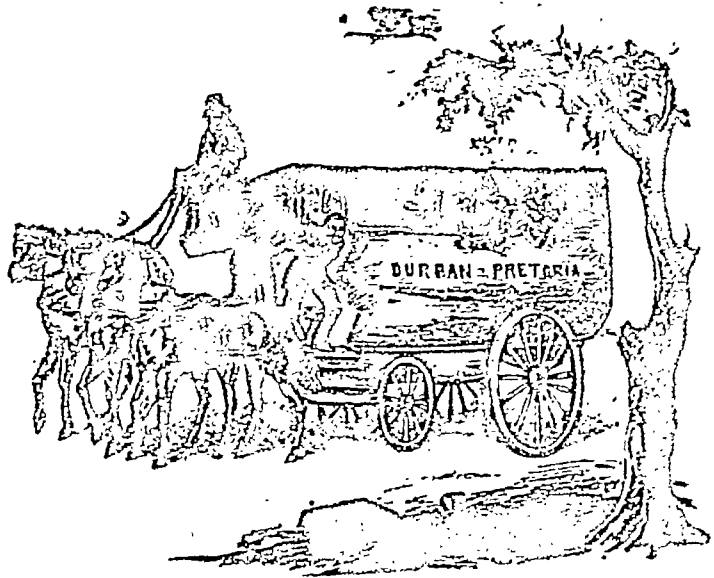
गोरा गार्ड गांधी जी को जबरदस्ती गाड़ी से नीचे गिरा रहा है.

पकड़े लटके रहे . गार्ड बराबर बेदर्दी से उन्हें मारता रहा और गालियां देता रहा . गोरे मुसाफ़िर कुछ देर तक तो यह तमाशा देखते रहे पर जब उनसे न रहा गया तो वह गार्ड को डांटने लगे . गार्ड ने जब देखा कि गोरे आदमी भी उस काले आदमी का साथ दे रहे हैं, तो वह गांधी जी का पीछा छोड़ कर चुपचाप साईस के पास जाकर बैठ गया . बेचारे गांधी जी की जान बच गई और उन्हें कोचवान के पास ख़ाली सीट पर फिर से बैठने को मिल गया .

"अरे, तुम तो रोने लगे, बस इतना ही नन्हा सा दिल है तुम्हारा. हरि. गांधी जी ने तो औरों के लिये इससे भी बड़े बड़े दुख सहे हैं . और कभी आह तक न की . जब लोग

उन पर अत्याचार करते तो उन्हें कभी झुंझलाहट न होती, उन्हें रंज जरूर होता था पर वह तुम्हारी तरह न थे ."

हरि ने झट कुरते के कोने से आंसू पोंछ डाले.

"गांधी जी ने जब दक्खिनी अफ़रीका में हिन्दुस्तानियों की बुरी गति बनते देखा तो उन्होंने तय किया कि वहां के हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई और पारसी सब को मिल कर अपनी शिकायतें वहां के सरकारी अफ़सरों तक पहुँचानी चाहियें . यह जी में ठान कर उन्होंने सब लोगों को एक किया और उनकी कोशिश से दक्खिनी अफ़रीका में कांग्रेस ने जन्म लिया . सब हिन्दुस्तानी क्या अमीर और क्या ग़रीब तन, मन, धन से कांग्रेस की मदद करते थे . धीरे धीरे वहां के अफ़सर हिन्दुस्तानियों की छोटी मोटी शिकायतों पर कान भी धरने लगे .

"हरि ! शायद तुम यह सोचते होगे कि आखिर गांधी जी के अफ़रीका जाने से पहले भी तो हिन्दुस्तानी वहां बसते थे और उन पर फिरंगी यह सब ज़ुल्म भी करते थे; फिर किसी और को इस तरह उनकी हालत सुधारने की क्यों नहीं सूझी ? बात यह है कि किसी के पास ऐसा दिल न था जो दूसरों की बिपता देख कर कांप उठता . अपनी जान जोखम में डाल कर गांधी जी बलवान के मुकाबले में, निर्बल का साथ देते थे . यही कारन था कि अफ़रीका में उन्होंने कमज़ोर और दुखी हिन्दुस्तानियों का साथ दिया .

"लोगों की इस तरह सेवा करने से गांधी जी का नाम बच्चे बच्चे की ज़बान पर चढ़ गया . वहां के हिन्दुस्तानी उन्हें आदर और प्यार से गांधी भाई पुकारने लगे . नाम के साथ साथ उनकी बैरिस्टरी भी चमक उठी .

"अब वहां के लोगों ने देखा कि गांधी जी के बिना उनका काम नहीं चलेगा और न उनके दुख दूर हो सकेंगे . इसलिये सबने मिलकर गांधी जी से कहा कि वह वहीं बस जायें . अपनी बैरिस्टरी भी करें और अपने हिन्दुस्तानी भाइयों की सेवा भी . गांधी जी ने भी इसी को मुनासिब समझा और वह अफ़रीका में बसने को तैयार हो गये और ६ महीने की छुट्टी ली कि हिन्दुस्तान जाकर अपने बीवी बच्चों को ले आयें .

"अफ़रीका से हिन्दुस्तान आने में उन दिनों चौबीस पच्चीस दिन लगते थे. गांधी जी का जी जहाज़ पर बेकार बैठे बैठे घबराने लगा . उन्होंने साथी मुसाफ़िरों में से एक मुंशी जी को ढूंढ निकाला और उनसे उर्दू पढ़ना शुरू कर दिया .

"हिन्दुस्तान पहुँचते ही गांधी जी ने अखबारों और लेक्चरों की मदद से अफ़रीका के हिन्दुस्तानियों का सच्चा सच्चा हाल सारे देश को बताया . सर फ़ीरोज़शाह मेहता और गोखले जैसे बड़े बड़े लीडरों ने उनकी बातों पर पूरा ध्यान दिया और मदद देने का प्रन किया .

"अभी वह यहां लोगों को तैयार कर ही रहे थे कि दक्खिनी अफ़रीका से बुलावे का तार आगया. गांधीजी अपने बाल बच्चों को लेकर अफ़रीका चल दिये. रास्ते में समुद्री तूफ़ान की मुसीबतें झेलते और दूसरे मुसाफ़िरों की सेवा करते करते वह डरबन वापस लौटे."

हरि—"अच्छा अम्मा फिर क्या हुआ?"

मां—"हरि, अब तुम भूके होगे, दोपहर का खाना रक्खा है, मैं गर्म किये देती हूँ, तुम पहले खाना खालो फिर बाक़ी कहानी सुन लेना."

हरि—"नहीं अम्मा, घर में कोई खाना नहीं खायेगा तो मैं भी नहीं खाऊंगा. आप कहानी सुनाये जाइये."

मां—"ना मेरे चांद, थोड़ा सा तो खालो."

हरि—"नहीं अम्मा, मुझे बिलकुल भूक नहीं. मैं तो कहानी सुनूंगा."

मां—"अच्छा तो जैसी तुम्हारी मरज़ी, लो फिर सुनो."
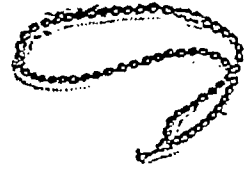
"इधर तो गांधीजी हिन्दुस्तान के लोगों को बता रहे थे कि दक्खिनी अफ़्रीक़ा में हिन्दुस्तानियों को गोरों के हाथों क्या दुख पहुँच रहे हैं, और उधर दक्खिनी अफ़्रीक़ा के अख़बारों में यह सब ख़बरें बढ़ा चढ़ा कर छापी जा रही थीं . वहां के गोरे इससे और भी चिढ़ गये . उनका बस चलता तो वह न जाने गांधीजी के साथ क्या सलूक करते . पर मारने वाले से बचाने वाला अधिक बलवान होता है . गांधीजी जहाज़ से उतरे ही थे कि कुछ फ़िरंगी लड़कों और गुन्डों ने उन्हें घेर लिया और उन पर पत्थरों, गंदे अंडों, घूँसों और

अंगरेज़ महिला लड़कों को गांधीजी को मारने से रोक रही है.

लातों की बौछार शुरू करदी . बेचारे गांधीजी निढाल होकर वहीं एक जंगले से लग कर खड़े हो गये . भगवान की करनी, उनके एक अंग्रेज़ मित्र की बीबी उधर से जारही थी कि अचानक उसकी नज़र गांधीजी पर पड़ी . वह भीड़ को चीरती हुई आई और उनके सामने

खड़ी हो गई . जब भीड़ कम हुई तो उस अंग्रेज़ औरत ने उन्हें उनके मित्र रुस्तमजी के यहाँ पहुँचा दिया . शाम को कुछ फ़िरंगियों ने रुस्तमजी का घर घेर लिया . सारी भीड़ गला फाड़ फाड़ कर कहने लगी—

"'खट्टे सेब के पेड़ पर गांधीजी को फांसी दो .'

"गांधीजी के मित्रों ने किसी न किसी तरह उन्हें दूसरी जगह पहुँचा दिया.

"गांधीजी चाहते तो उन गुन्डों पर मुक़दमा चला सकते थे और उनको सज़ा भी दिलवा सकते थे . पर नहीं, उन्हें अपने पिताजी का बताया हुआ प्रेम का पाठ याद था . उन्होंने बड़े धैर्य से काम लिया, ताकि गोरे बलवाई अपने किये पर आप पछतायें . गांधीजी की इस बात का वहाँ के फ़िरंगियों पर बड़ा अच्छा असर हुआ और उनके दिलों में हिन्दुस्तानियों के लिये थोड़ी सी जगह हो गई .

"अफ़रीक़ा में जब बोअर लोगों और अंग्रेज़ों में युद्ध हुआ तो गांधीजी ने अंग्रेज़ों का साथ दिया. कोई और होता तो अंग्रेज़ों से उनके बुरे बर्ताव का बदला लेता. पर ऐसा होता तो कैसे . गांधीजी का तो सदा का नियम था, बुराई का बदला भलाई से दो और दुश्मन का दिल प्रेम और मोहब्बत से जीत लो . इसी हथियार से काम लेकर गांधीजी ने अंग्रेज़ों के दिलों पर अपनी और अपने साथ अफ़रीक़ा के दूसरे हिन्दुस्तानियों की सच्चाई और नेकी की गहरी छाप लगादी .

"गांधीजी के घर में भगवान का दिया सब कुछ था. पत्नी, बच्चे, रुपया, पैसा . पर फिर भी उनके दिल को चैन न था . गौतम बुद्ध की तरह उन्हें भी दुनिया का ऐश-आराम बुरा लगने लगा . बहुत सोच विचार के बाद उन्होंने यह ठान लिया कि, दुनिया का ऐश आराम छोड़ कर सरल जीवन में ही उनको आनन्द मिल सकता है . यह तय करने के बाद गांधी जी ने अपना सारा काम अपने आप करना शुरू कर दिया . कपड़े धोना, झाड़ू देना, पाखाना साफ़ करना, खाना पकाना, इस प्रकार धीरे धीरे सब काम वह अपने हाथों से करने लगे .

"एक दिन वह किसी अंग्रेज नाई की दुकान पर बाल कटवाने गये. तुम जानो, उन दिनों काले आदमी से अंग्रेज़ों को घृना तो थी ही, उस नाई ने गांधीजी के बाल काटने से इनकार कर दिया . वह बिना कुछ कहे सुने घर लौट आये और अपने अंग्रेज़ी ढंग के लम्बे लम्बे बाल काट कर छोटे कर लिये . इससे पहले उन्होंने अपने बाल अपने हाथ से भला काहे को काटे होंगे, इसलिये ऐसे छोटे बड़े कटे कि जैसे सोते में चूहे ने कुतर

लिये हों . दूसरे दिन जब गांधीजी कचहरी गये तब साथियों ने ख़ूब हँसी उड़ाई पर जब उन्होंने बताया कि किस तरह तंग आकर उन्हें अपने बाल आप काटने पड़े, तब वह सब चुप रह गये . इसके बाद गांधीजी ने अंग्रेज़ी ढंग के बाल रखना छोड़ दिये और हमेशा अपने बाल आप काटा करते थे ."

हरि—"अम्मा ! अपने बाल काट कर जब गांधी जी ने शीशे में अपनी सूरत देखी होगी तब उन्हें बड़ी हंसी आई होगी ?"

माँ—"अवश्य, तुमने तो देखा था वह कैसे हंसमुख आदमी थे .

गांधीजी अपने हाथों अपने बाल काट रहे हैं.

"अच्छा तो अंग्रेज़ों और बोअरों के युद्ध के बाद सन् १९०२ में जब शान्ति हुई, तब गांधीजी को हिन्दुस्तान की याद सताने लगी और यहाँ आकर देश की सेवा करने की लगन ने उन्हें गुदगुदाया . सामान बंधने लगा और हिन्दुस्तान लौट चलने की तैयारियाँ होने लगीं . चलते समय गांधी जी को अफ़रीक़ा के हिन्दुस्तानियों ने उनकी सेवाओं के बदले में बड़े बड़े क़ीमती तोहफ़े दिये . और कस्तूरबा को एक हीरों का हार दिया . गांधीजी ने यह सब चीज़े काँग्रेस के दफ़तर में जमा करादीं कि उनसे लोगों की सेवा हो सके . गांधीजी का कहना था कि जनता के सेवकों को ऐसी चीज़ों के लेने या रखने का कोई हक़ नहीं .

"सन् १९०६ ई० में जब गांधी जी हिन्दुस्तान लौटे तो कलकत्ते में काँग्रेस की तैयारियाँ बड़े ज़ोरों पर थीं . सब हिन्दुस्तानियों के दिलों को आज़ादी की लगन लगी हुई

थी . गांधीजी ने देखा कि हिन्दुस्तानियों में आज़ादी का जोश तो है पर मिल जुल कर काम करने की आदत नहीं है . हर आदमी अपना काम दूसरों पर डालना चाहता है और छोटे छोटे काम करने में लोग, अपनी हतक समझते हैं . यह देख कर गांधीजी ने काँग्रेस के कामों का बीड़ा उठाया और जल्से में मेहमानों के कमरों की सफ़ाई का काम अपने हाथ में लिया . उनको देख कर और लोग भी उनका हाथ बटाने लगे . इस के बाद गांधीजी काँग्रेस सेक्रेट्री के नीचे मुन्शी का काम करने लगे . उसी जल्से में उन्होंने हिन्दुस्तान के लीडरों को अफ़्रीक़ा के हिन्दुस्तानियों का हाल सुनाया और काँग्रेस की हमदर्दी हासिल की .

"कांगरेस का जल्सा समाप्त होने पर जब वह घर लौटे तो तीसरे दरजे में आये . वह दिन सो आज का दिन, गांधीजी बराबर तीसरे दरजे में ही सफ़र करते रहे . इस कारन से एक तो उनका ख़र्च कम होता था दूसरे ग़रीबों के साथ बैठ कर उनसे बातें कर सकते थे . गांधीजी कलकत्ते से बनारस, आगरा, जयपुर और पालनपुर होते हुए राजकोट पहुँचे, और इस सारे सफ़र में उन्होंने कुल इकत्तीस रुपये ख़र्च किये . वह सामान भी बहुत थोड़ा साथ लेकर चलते थे, उनके साथ खाना रखने के लिये टीन का एक कटोरदान हुआ करता था जो उन्हें श्री गोखले ने दिया था, और एक मामूली थैले में एक गरम कोट, एक धोती, एक कमीज़ और एक तौलिया ."

हरि—"अम्मा ! उनके थैले में साबुन और दाँत माँजने का ब्रुश भी तो होता होगा ?"

अम्मा—"नहीं बेटा, वह अपने दाँत क़ुदरती ब्रुश से साफ़ करते थे जिसे दातुन कहते हैं ."
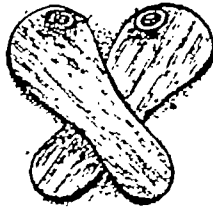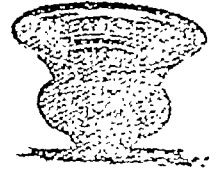
"श्री गोखले, जिनका नाम मैंने अभी लिया था, हिन्दुस्तान के बहुत बड़े लीडर थे. वह गांधीजी को अपने छोटे भाई की तरह समझते थे. उन के ही कहने पर गांधीजी ने बम्बई में फिर बैरिस्ट्री शुरू की. अभी तीन चार महीने ही हुए होंगे कि अफ़रीक़ा से फिर बुलावे के तार आने शुरू हो गये. वहाँ के हिन्दुस्तानी चाहते थे कि अफ़रीक़ा आ कर गांधीजी अंग्रेज़ वज़ीर, मिस्टर चेम्बरलेन से मिलें और हिन्दुस्तानियों की शिकायतें दूर करायें. गांधीजी ने देखा कि यह एक बड़ा काम है जिसके लिये उनका अफ़रीक़ा जाना ज़रूरी है. वह फ़ौरन अफ़रीक़ा चल दिये, वहाँ पहुंच कर उन्होंने बैरिस्ट्री छोड़ दी और एक अख़बार निकाला. प्लेग के बीमारों की देख भाल की, मज़दूरों की सेवा करके उनकी हालत सुधारी और हिन्दुस्तानियों को बराबरी के हक़ दिलाने के लिये इस बार उन्होंने और ज़ोर शोर से काम किया. उन्हीं दिनों गांधीजी ने अपने मन को पवित्र करने के लिये व्रत रक्खे और गीता के तेरह अध्याय मुँह ज़बानी याद किये. उनके दिल में यह अच्छी तरह से जम गया था कि दुनिया के ठाठ बाट और ऐश आराम छोड़ कर ही आदमी भगवान् के रास्ते पर चल सकता है.

"उन्होंने समझ लिया था कि संसार के सब आदमी बराबर हैं, कोई किसी से छोटा बड़ा नहीं, ग़रीबों में ग़रीब बन कर और घुल मिल कर ही रहना चाहिये. इसलिये वह

एक छोटे से गाँव में जाकर बस गये, वहीं अख़बार का काम शुरू कर दिया और गाँव वालों की सी सादी जिन्दगी बसर करने लगे. गांधीजी के अंग्रेज़ मित्रों पर उनकी इन बातों का इतना गहरा असर हुआ कि तीन अंग्रेज़ उनके साथ उसी गाँव में आकर रहने लगे.

"उन्हीं दिनों एशिया के लोगों के विरुद्ध अफ़रीक़ा में नये नये कड़े क़ानून बनाये गये. गांधीजी की सम्मति से लोगों ने उन क़ानूनों को तोड़ने के लिये इस बार सत्याग्रह शुरू कर दिया. अहिंसा की लड़ाई में गांधीजी का यही सब से बड़ा हथियार था. हिन्दुस्तानियों ने सरकार की गोली और लाठी का उत्तर शान्ति, अहिंसा और बलिदान से दिया. जेल जाना बच्चों का खेल हो गया. गांधीजी सन् १९०८ ई० में पहली बार क़ानून तोड़ने के लिये जेल भेजे गये. बीस दिन के बाद गांधीजी को वहां के बड़े वज़ीर जेनरल स्मट्स ने समझौते के लिये प्रीटोरिया बुलाया. गांधीजी ने यह शर्त रक्खी कि जब मेरे सब साथी क़ैद से छोड़ दिये जायेंगे तब मैं हकूमत से समझौते की बात चीत करूंगा. सब साथी छोड़ दिये गये और जोहांसबर्ग की मस्जिद में एक बड़ा जलसा हुआ और सब ने मिल कर यह तय किया कि हकूमत से समझौता होना चाहिये. पर कुछ जोशीले पठानों को यह बात अच्छी नहीं लगी. यहां तक कि एक पठान ने गांधीजी को पीटा भी जिस से उनके सिर में बड़ी चोट आई."

हरि—"अम्मा ! तो फिर गांधीजी ने पठान को सज़ा नहीं दिलवाई ?"

माँ—"नहीं बेटा, उन्होंने उस पर मुक़दमा चलाने से इन्कार कर दिया और कहा—'मेरे घाव की पट्टी से मेरे शत्रु भी मेरी मित्रता के बंधन में बंध जायेंगे.' और बेटा, सचमुच ऐसा ही हुआ. जब उस पठान ने यह सुना तो वह अपने किये पर बहुत पछताया, गांधीजी से माफ़ी मांगी और हमेशा के लिये उनका दोस्त बन गया.

"सन् १९१४ ई० में दुनिया में चारों तरफ़ लड़ाई के बादल छाये हुए थे. चार अगस्त को इंगलिस्तान ने जर्मनी से लड़ाई का एलान कर दिया और बड़े ज़ोरों से युद्ध छिड़ गया. गांधीजी ने अब यह सोचा कि इन दिनों मेरे देश को मेरी सेवा की ज़रूरत होगी. वह पहले अफ़रीक़ा से लंदन गये और फिर कुछ दिन वहां रह कर हिन्दुस्तान आये. ९ जनवरी सन् १९१५ ई० को वह बम्बई पहुँचे. उस समय वह हिन्दुस्तानी मिल के बुने हुए कपड़े काठियावाड़ी कोट पगड़ी और धोती पहने हुये थे."

हरि—"कोट पहन कर वह बड़े अच्छे लगते होंगे. फिर उन्होंने यह कपड़े पहनना कब और क्यों छोड़ दिया ?"
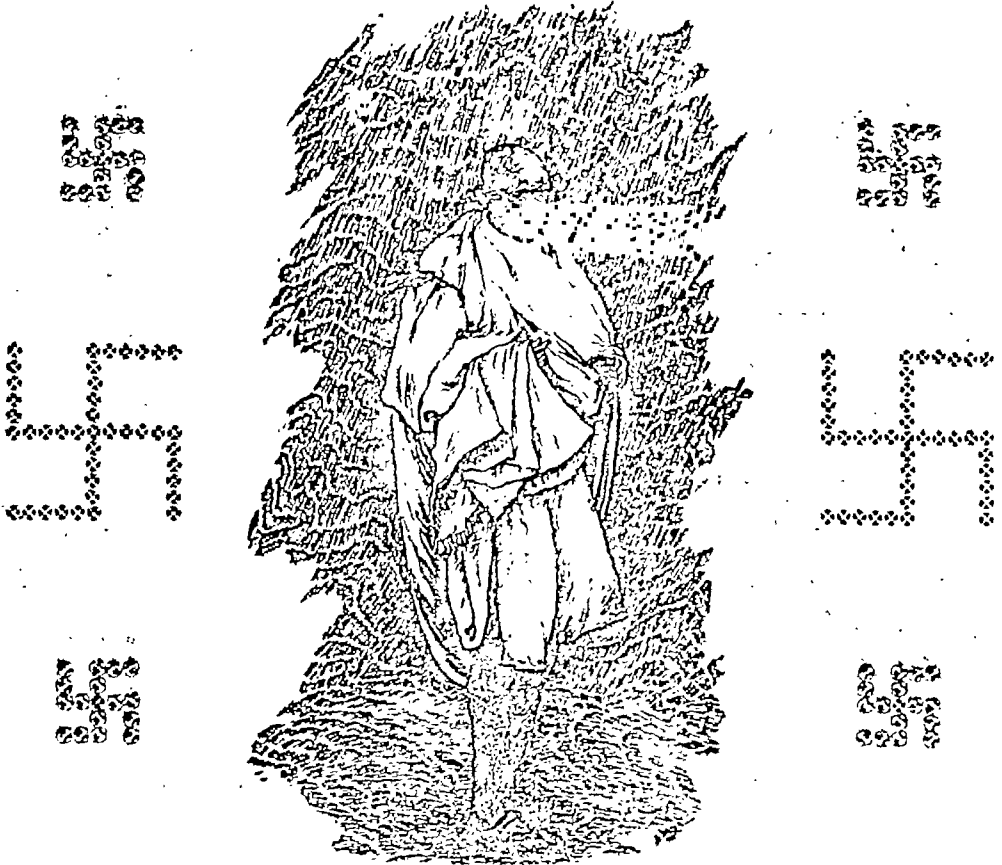
माँ—"हाँ अच्छे तो लगते ही थे . सन् १९१९ ई० में जब उन्होंने देखा कि देश में बहुत से ग़रीबों को कोट क्या, कुरता भी पहनने को नहीं मिलता तो उन्होंने यही पहनना शुरू कर दिया जो हिन्दुस्तान का ग़रीब से ग़रीब आदमी पहनता है . तब ही से वह एक छोटी सी धोती पहनने लगे और कुरते और कोट की जगह कभी कभी चादर ओढ़ लेते थे ."
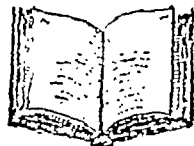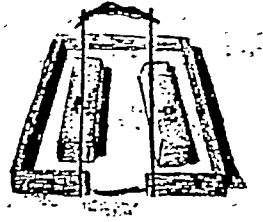
"सन् १९१५ ई० में गांधीजी ने श्री गोखले की राय से गुजरात के एक छोटे से गाँव कोचरब में एक आश्रम खोला. आश्रम के हर मेम्बर को यह सौगन्ध खानी पड़ती थी कि, मैं कभी झूठ नहीं बोलूंगा, अहिंसा को मानूँगा, सादा खाना खाऊँगा, चोरी नहीं करूंगा, अपने लिये रुपया पैसा जमा नहीं करूंगा, किसी से डरूंगा नहीं, स्वदेशी चीज़ें बरतूँगा, हाथ का कता और हाथ का बुना खद्दर पहनूँगा, हिन्दुस्तानी बोली में विद्या फैलाने और छूतछात मिटाने की कोशिश करूंगा.

"कोचरब आश्रम में अछूत जाति के लोग और ऊँची जाति वाले सब एक साथ रहते सहते, उठते बैठते और खाते पीते थे. वहाँ सब लोग बराबर थे, कोई किसी से ऊँचा या नीचा न था. पहले तो आश्रम वालों को यह चीज़ कुछ अद्भुत सी लगी पर धीरे धीरे आदत हो गई. हमारे देश में इस से पहले ऐसी बात भला काहे को हुई थी. बहुत से लोगों ने इसे बुरा समझा, यहां तक कि अमीर लोगों ने रुपये पैसे से आश्रम की मदद करनी बन्द कर दी. एक दिन जब गांधीजी को पता चला कि आश्रम को चलाने के लिये एक कौड़ी भी नहीं रही तो वह बड़े सोच में पड़ गये. शाम के समय वह उदास से बैठे थे और हैरान थे कि क्या करूँ कि इतने में यकायक एक अजनबी आदमी आश्रम में आया और गांधीजी को सोलह हज़ार रुपये देकर चला गया. सब ईश्वर के सच्चे भक्तों और अल्लाह वालों के लिये इसी तरह सामान पैदा हो जाया करते हैं.

"गांधीजी के काम, उनकी सच्चाई, उनकी नेकी और उनके त्याग को देख कर रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हें 'महात्मा' कहना शुरू कर दिया. और फिर सारा देश उन्हें महात्मा के नाम से पुकारने लगा. महात्मा जी जहाँ जाते सैकड़ों हज़ारों लोग उनके दर्शन को आते, उनके पाँव छूते और उनके हाथ चूमते थे.

"उस समय देश में अंग्रेज़ों से घृना बढ़ती जा रही थी और लोग उनसे तंग आ चुके थे. महात्मा जी चाहते थे कि हिम्मत और जोश तो बना रहे पर किसी तरह घृना दिलों से धुल जाये. वह यह भी ख़ूब जानते थे कि अंग्रेज़ की हकूमत से टक्कर लेना कोई खेल नहीं. इसके लिये उनको सारी जनता को साथ लेना होगा. बस उन्होंने ग़रीबों, मज़दूरों और किसानों के लिये अपने आप को तज दिया और उनकी हालत सुधारने के लिये सब तरह की कोशिश करने लगे.

"इंगलिस्तान और जर्मनी की लड़ाई उन दिनों ज़ोरों पर थी और अंगरेज़ों को इस लड़ाई में हिन्दुस्तानियों की मदद की बड़ी ज़रूरत थी . उन्होंने गांधीजी को तैयार कर लिया, कि वह उनकी मदद करें . कोई दूसरा होता, तो अंगरेज़ों का बर्ताव हिन्दुस्तानियों के साथ देखते हुए कभी अंगरेज़ों की मदद न करता . पर गांधीजी का नियम था कि शत्रु की मुसीबत से लाभ नहीं उठाना चाहिये, फिर वह भला अंगरेज़ की मुसीबत से लाभ कैसे उठाते . वह तो उन पर अहसान का बोझ डाल कर हिन्दुस्तान को उनके हाथों से स्वतंत्र कराना चाहते थे . दूसरे, गांधीजी यह समझते थे कि अंगरेज़ जो अत्याचार हम पर करते हैं यह उस क़ौम की घुट्टी में नहीं है बल्कि कुछ घटिया अंगरेज़ अफ़सरों की, जो हिन्दुस्तान में आकर राज करते हैं, उनकी नासमझी के कारन ऐसा होता है, और हम अंगरेज़ क़ौम को अपने प्रेम से मोह सकते हैं . इसीलिये गांधीजी स्वयं गाँव गाँव गये और लोगों से फ़ौज में भरती होने को कहा . इस काम में उन्होंने न दिन देखा न रात, इतनी जान खपाई कि वह बीमार पड़ गये . अभी बीमार ही थे कि ख़बर आई कि लड़ाई ख़तम हो गई और साथ ही भरती का काम भी बन्द हो गया . इसी बीमारी में गांधीजी ने बकरी का दूध पीना शुरू किया और मरते दम तक उबली हुई तरकारियों और बकरी के दूध पर बसर करते रहे ."

हरि—"लड़ाई बन्द हो जाने से महात्मा जी और देश के सब लोग बहुत ख़ुश हुए होंगे ?"

माँ—"हाँ, ख़ुश तो ज़रूर हुए कि संसार में मारकाट बन्द हो गई, पर हमारे देश का उस समय अद्भुत हाल था . लड़ाई बन्द होने पर सब लोग समझते थे कि अब अमन, चैन, उन्नति और ख़ुशहाली के दिन आयेंगे . हमने अंगरेज़ों के लिये जो बलिदान किये थे, उनके बदले में हमें थोड़ी बहुत आज़ादी मिलेगी . पर किसकी आज़ादी और कैसी शान्ति ! अंगरेज़ों ने तो हम पर पहले से भी अधिक अत्याचार करना शुरू कर दिया . ऐसे नए नए क़ानून बनाये जिनसे वह हमारे बड़े से बड़े लीडरों को छोटी से छोटी बात पर पकड़ कर जेल में ठूँस सकते थे . फिर क्या था, ऐसा अन्धेर देख कर कलकत्ते से कराची और कश्मीर से रास कुमारी तक गुस्से और जोश की एक लहर दौड़ गई . मुल्क के कोने कोने में सभायें हुईं, भाशन हुए और हमारे देश का बच्चा और बूढ़ा, मर्द और औरत, हिन्दू और मुसलमान क़ानून तोड़ने और देश के लिये जान की बाज़ी लगाने पर तुल गया.

"महात्मा गांधी उठ खड़े हुए और उन्होंने प्रेम की ज्योति जला कर अंधेरे देश में उजाला कर दिया . सारे देश के लोगों ने एक ज़बान हो कर अंगरेज़ से स्वराज माँगना शुरू किया . गांधीजी सब के लीडर बने . उन्होंने सब से पहली शर्त यह लगाई कि अंगरेज़ी राज से लड़ने में सिर्फ़ अहिंसा और शान्ति से काम लिया जाये, मारपीट

का नाम तक न हो. मुसलमान और हिन्दू कंधे से कंधा जोड़ कर अंगरेज़ सरकार से लड़ने के लिये खड़े हो गये. महात्मा गांधी ने एक दिन ऐसा रक्खा, जब देश के चप्पे चप्पे में हड़ताल की गई, सब कारोबार बन्द हो गये. मुसलमानों ने रोज़े और हिन्दुओं ने व्रत रक्खे. मन्दिरों, मस्जिदों और गुरुद्वारों में दुआयें माँगी गईं कि भगवान् हमारे देश को स्वतंत्र करा दे.

"हड़ताल की सूचना सारे मुल्क में फैल गई, भला सरकार को यह बात कैसे अच्छी लगती. उसने हमें दबाने के लिये हम पर तरह तरह के अत्याचार शुरू कर दिये. अमृतसर में जलियाँवाला बाग़ में जलसा करने वालों पर जेनरल डायर ने गोली चलाने का हुक्म दिया. सैकड़ों निहत्थे मर्द, औरत, बच्चे, जवान और बूढ़े थोड़ी सी देर में भून डाले गये. पंजाब भर में हज़ारों को जेलों में ठूँस दिया गया.

"डाक, रेल, तार सब बन्द थे. पंजाब की ख़बर महात्मा गांधी तक पहुँचे तो क्यों कर पहुँचे. पर ऐसी बात भला कब तक छुप सकती थी. थोड़े दिन बाद किसी न किसी तरह पंजाब की विपता की ख़बर महात्माजी तक पहुंच ही गई. यह दुखभरी कहानी सुन कर उनका दिल भर आया, तड़प कर पंजाब वालों की मदद के लिये चल निकले. वह अमृतसर पहुँचने भी न पाये थे कि रास्ते ही में सरकार ने उनको पकड़ कर लौटा दिया और वह फिर बम्बई पहुंचा दिये गये.

"अंगरेज़ी राज का सारा बल महात्मा गांधी को दबाने पर तुला हुआ था. पर इस सख़्ती से महात्मा जी की हिम्मत न टूटी, बल्कि वह पहले से भी अधिक निडर होकर काम करने लगे. इस देश की सब जातियों को एक करने की कोशिश में लग गये. उनकी मेहनत फल लाई और बड़े बड़े मुसलमान लीडर, हिन्दू लीडरों के साथ एक ही झंडे के नीचे जमा हो गये. इन दोनों जातियों को एक करने के बाद भी बहुत सा काम बाक़ी था. सच्ची आज़ादी हासिल करने के लिये अभी और तैयारियाँ ज़रूरी थीं. महात्मा जी ने निर्बल के दिल से बलवान का डर, ग़रीब के दिल से अमीर का डर, किसान के दिल से ज़मींदार का डर, हरिजन के दिल से ब्राह्मन का डर और हिन्दुस्तानी के दिल से अंगरेज़ का डर निकालने के लिये यत्न करना

खिलाफ़त के समय हिन्दू मुस्लिम एकता.
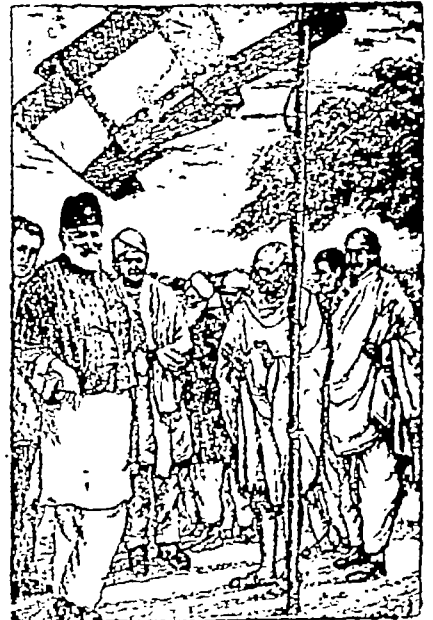
शुरू किये. वह बार बार पुकार पुकार कर कहते थे कि लोगों के दिलों से हर तरह

का डर निकालने और उन्हें आज़ाद कराने के लिये, सचाई और अहिंसा सब से अधिक ज़रूरी हैं .

"आज से दो हज़ार बरस पहले महात्मा बुद्ध ने हिन्दुस्तानियों को अहिंसा का सबक़ पढ़ाया था . पर उसे हम भूल चुके थे . महात्माजी ने फिर वही पाठ दोहराया कि किसी की जान लेना सब से बड़ा पाप है . और साथ ही साथ यह भी बताया कि हमें देश की आज़ादी और अपनी आज़ादी के लिये लड़ना चाहिये . पर यह लड़ाई ख़ूनी हथियारों से नहीं लड़ी जायेगी बल्कि शान्ति से लड़ी जायेगी . हिन्दुस्तानी सो चुके थे, महात्माजी ने हमें झंझोड़ कर जगाया . उन्होंने अपने एलची गाँव गाँव भेजे कि जनता अपने आप को स्वतन्त्र कराने के लिये तैयार हो जाये . इसी के साथ साथ उन्होंने यह कोशिश भी की कि लोग पढ़ना, लिखना, चर्खा कातना और कपड़ा बुनना भी सीखें . छूतछात छोड़ दें और शराब पीना बन्द कर दें . महात्मा जी, जो कुछ दूसरों से कराना चाहते थे वह पहले स्वयं करते थे . इसीलिये उन्होंने चर्खा कातना सीखा और थोड़े ही दिनों में वह दोनों हाथों से कातने लगे .

"अभी महात्मा जी हिन्दुस्तान को जगा कर होशियार कर ही रहे थे कि इतने में सुना कि इंगलिस्तान के बादशाह का बड़ा बेटा हिन्दुस्तान आ रहा है . इस समय लोग किसी तरह स्वागत करने को तैयार न थे . उन को अंगरेज़ सरकार से बड़ी शिकायत थी कि वह उन पर रोब डालने के लिये बादशाह के बेटे को यहाँ बुला रही है . सब ने तय किया कि वह जलसे या जलूस में शामिल न होंगे . एक ओर तो बादशाह के बेटे की सवारी बम्बई के सजे हुए पर सुनसान बाज़ारों में से निकल रही थी और दूसरी ओर लोग विदेशी कपड़ों के ढेर लगा लगा कर उन्हें आग लगा रहे थे . इसलिये कि स्वदेशी माल के प्रचार का उन दिनों बड़ा ज़ोर था .

"यह सब कुछ बड़ी शान्ति के साथ हो रहा था कि एक दम कुछ सिरफिरों ने जोश में आकर अहमदाबाद और बम्बई में मार धाड़ शुरू कर दी . कुछ अंगरेज़ों पर पत्थर बरसाये . जिन पारसियों ने बादशाह के बेटे के स्वागत में भाग लिया था उनको पीटा, ट्राम गाड़ियाँ तोड़ डालीं और शराब की दुकानों में घुस कर तोड़ फोड़ की . जब महात्माजी को इस की सूचना मिली तो वह स्वयं मोटर में बैठ कर बम्बई में जगह जगह गये . एक जगह उन्होंने देखा कि दो घायल पुलिस वाले चारपाइयों पर बेहोश पड़े हैं . जैसे ही महात्माजी मोटर से उतरे, भीड़ ने उन्हें घेर लिया और हर तरफ़ से 'महात्माजी की जय'

पुकारी जाने लगी . अपने नाम पर लूटमार और तबाही देख कर उनके दिल को चोट लगी . उन्होंने लोगों को बुरा भला कहा और समझाया कि इस ढंग से हकूमत से लड़ना, गांधी और अहिंसा, दोनों की हार है . उन्होंने कहा कि मैं कभी ऐसी आज़ादी नहीं चाहता जो हिंसा के बाद हाथ लगे . जब लोगों ने यह सुना तब वह अपने किये पर बहुत पछताये . गांधीजी ने घायल सिपाहियों को वहां से उठा कर अस्पताल पहुंचा दिया . अभी गांधी जी लोगों को समझा बुझा कर ठंडा करने ही पाये थे, कि ख़बर आई, शहर के किसी दूसरे हिस्से में एक जलूस पर पुलिस ने गोलियाँ बरसाईं. इस का सुनना था कि शहर में हलचल मच गई . जगह जगह लोगों ने दुकानें तोड़ीं, गाड़ियाँ जलाईं और जो न करना था वह किया .

"गांधीजी ने जब देखा कि लोग आपे से बाहर हुए जा रहे हैं तो उन्होंने व्रत रखने की ठानी और कहा—'मैं लोगों के किये की सज़ा स्वयं भुगतूंगा और जब तक वह हिन्दू और मुसलमान जिन्होंने अहिंसा का नियम तोड़ा है जाकर उन पारसी ईसाई और यहूदी भाइयों से जिनको हमारे हाथों दुख पहुँचा है, माफ़ी नहीं मांगेंगे मैं अपना व्रत नहीं खोलूँगा .'

"जो कुछ महात्माजी चाहते थे वही हुआ . सब पारटियों के लीडर मिल कर उनके पास आये और उनको यक़ीन दिलाया कि मार-पीट करने वालों ने एक एक से माफ़ी मांगी है और जिन को दुख पहुँचा था, उन्होंने माफ़ भी कर दिया है, तब कहीं जाकर गांधीजी ने अपना व्रत खोला . उसी दिन से गांधीजी ने अहद किया कि जब तक हिन्दुस्तान को स्वराज नहीं मिलेगा वह हर सोमवार को मौन व्रत रक्खा करेंगे ."

हरि—"अम्मा, महात्माजी हर सोमवार को मौन व्रत क्यों रखते थे ?"

माँ—"इससे महात्माजी को बड़ा आराम मिलता था . उन्हें सोचने समझने के लिये चौबीस घन्टे मिल जाते थे, और और इसी दिन वह अपने समाचार पत्र के लिये लेख लिखते थे ."

१०
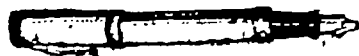
"गांधीजी सोच रहे थे कि अहिंसा की लड़ाई को जारी रक्खें या छोड़ दें . बम्बई का हाल देख कर उनको यह डर था कि कहीं लोग जोश में आकर फिर मारपीट शुरू न कर दें पर जब और शहरों से ख़बरें आईं कि वहाँ सत्याग्रह और हड़तालें बिलकुल शान्ति से हुईं तो उनकी हिम्मत बंधी और वह अहिंसा की लड़ाई जारी रखने को तैयार हो गये .

"हड़तालों के बाद बहुत से लोगों ने विदेशी माल खरीदना छोड़ दिया, जिस से इंगलिस्तान के कारखानों को बहुत नुक़सान उठाना पड़ा . सरकार ने इस आन्दोलन को दबाने के लिये हमारे बड़े बड़े लीडरों जैसे पंडित मोतीलाल नेहरू, देश बन्धु चितरंजनदास, लाला लाजपतराय, मौलाना आज़ाद और सैकड़ों और देश भक्तों को पकड़ पकड़ कर जेलों में भर दिया .

"कोई और होता तो उसका जी छूट जाता और वह हिम्मत हार कर बैठ जाता, पर गांधीजी स्वतन्त्रता का झंडा दृढ़ता से थामे डट कर सरकार से मुक़ाबला करते रहे . उन्होंने बार बार वायसराय से कहा कि वह हमारे लीडरों को छोड़ दें पर वायसराय इस बात पर तैयार न हुए .

"आज़ादी की लड़ाई ज़ोरों पर थी . मालूम होता था कि जीत हमारी ही होगी, कि एकाएक ख़बर आई कि महात्माजी ने लड़ाई रोक दी . किसी की कुछ समझ में न आया कि बात क्या है . कोई कहता महात्माजी अंगरेज़ों से डर गये, कोई कहता अंगरेज़ों से समझौता कर लिया . जितने मुँह उतनी बातें . पर समझदार लोग जान गये कि असली बात क्या है ."

हरि—"अम्मा, वह असली बात क्या थी ? महात्माजी ने लड़ाई क्यों रोकी ?"

माँ—"बात यह थी, महात्माजी ने जब देश की आज़ादी की लड़ाई शुरू की तो बार बार अहिंसा का पाठ दोहराया . वह जानते थे कि इतनी बड़ी सरकार से लड़ना आसान काम नहीं . जब लोग सरकार का मुक़ाबला करेंगे तो सरकार लोगों को दंड ज़रूर देगी . पुलिस उन पर लाठियाँ बरसायेगी, गोली चलायेगी . ऐसे में शान्त रहना ही तो

अहिंसा की सच्ची पहचान होगी . देश में जगह जगह लोग क़ानून तोड़ रहे थे और जवाब में चुपचाप लाठियाँ खा रहे थे . पर यू० पी० में गोरखपुर ज़िले के गाँव चौरीचौरा में कुछ जवानों ने मार-पीट का उत्तर मार-पीट से दिया और एक पुलिस चौकी को आग लगादी . उसमें इक्कीस पुलिस वाले जल कर मर गये . लोगों की इस हरकत पर महात्मा जी को बड़ा दुख हुआ और उन्होंने उसी दम लड़ाई बन्द करने की आज्ञा देदी और कहा—'जो स्वतंत्रता किसी मनुष्य की जान लेकर या किसी को दुख देकर मिले वह किसी काम की नहीं . ऐसी आज़ादी से ग़ुलामी हज़ार गुना अच्छी है . मैं जानता हूँ कि भूल मुझ से ही हुई है . देश के लोग अभी अहिंसा का पाठ पूरी तरह पढ़ नहीं पाये . जब तक वह अहिंसा को अपने असली रूप में नहीं पहचानेंगे तब तक सत्याग्रह नहीं कर सकते . सत्याग्रह के लिये नर्मी, सचाई, सब्र, समझदारी, बरदाश्त और मित्र शत्रु दोनों के लिये प्रेम ज़रूरी है .'

"स्वयं अपनी भूल और अपने देश वालों को भूल को खुल्लम-खुल्ला मान लेने ही पर गांधीजी ने बस नहीं की, उन्होंने साथ ही साथ पाँच दिन का व्रत भी रक्खा और बम्बई से साबरमती आश्रम लौट आये . वहाँ से वह अहिंसा का प्रचार देश भर में करना चाहते थे . अभी वह साबरमती पहुँचे ही थे कि चौथे दिन सरकार ने उन्हें पकड़ लिया और कस्तूरबा ने उनकी तरफ़ से देशवालों को सन्देश भिजवाया कि सब लोग विदेशी कपड़े छोड़ कर स्वदेशी कपड़े पहनें, चर्खा कातें, छूतछात छोड़ दें और देश सुधार का काम करें .

"गांधीजी ने जेल की सब सख़्तियाँ हँस हँस कर झेलीं . रोज़ सवेरे उठ कर गीता पढ़ते, दोपहर को क़ुरान और शाम को एक चीनी ईसाई के साथ बाइबिल पढ़ा करते, चर्खा कातते और जो समय बचता उसमें उर्दू और तामिल लिखना पढ़ना सीखते .

"गांधीजी यों तो हमारी आँखों से ओझल थे, मगर हमारे दिलों में उनकी याद हरदम रहती थी . उन्हें जेल गये दो बरस भी न बीते थे कि वह बहुत बीमार हो गये . उनकी बीमारी की ख़बर सुन कर सारे देश में हलचल मच गई . छै महीने बीमार रहने के बाद जब सरकार ने उनके अच्छे होने की कोई और सूरत न देखी, तब उन्हें पूना के सरकारी अस्पताल में भेज दिया . वहाँ एक बहुत बड़े डाक्टर ने उनका एपेंडिक्स का आप्रेशन किया . कुछ दिन बाद जब यह मालूम हुआ कि अब वह बच जायंगे, तो कुछ न पूछो, हिन्दुस्तान वाले कितने प्रसन्न थे .

"फ़रवरी का महीना शुरू होते ही ख़बर मिली कि सरकार ने गांधीजी को जेल से छोड़ दिया है. गांधीजी ने जेल से निकलते ही मौलाना मोहम्मद अली को, जो उन दिनों कॉंग्रेस के प्रेज़ीडेंट थे, पत्र लिखा कि इस तरह की रिहाई से मुझे बिलकुल खुशी नहीं और जब तक ६ साल पूरे नहीं हो जायेंगे मैं जेल से बाहर होते हुए भी अपने आप को सरकार का क़ैदी ही समझूँगा, और आज़ादी की लड़ाई में सरकार से कोई टक्कर नहीं लूँगा.

"पूना के अस्पताल से गांधीजी को बम्बई के पास समुद्र के किनारे जुहू भेज दिया गया. यहाँ गांधीजी धीरे धीरे अच्छे होने लगे. उनके पास आज़ादी के मतवाले पंडित मोतीलाल नेहरू, देशबन्धु चितरंजन दास और पंडित जवाहर लाल सब आते. गांधीजी उन सबसे घंटों बैठ कर स्वराज की बातें करते, और अब तो यह बात गांधीजी के दिल में घर कर गई थी कि जब तक इस देश से ग़रीबी, मूढ़ता, छूतछात और फूट दूर नहीं होगी, तब तक यह देश आगे नहीं बढ़ सकता, और सदा इसी तरह ग़ुलामी में जकड़ा रहेगा.

"अच्छे होते ही गांधीजी ने हिन्दुस्तान की हालत सुधारने के लिये अनथक कोशिश शुरू कर दी. जगह जगह लोगों को सूत कातना और कपड़ा बुनना सिखाया जाने लगा ताकि वे विदेशी कपड़ा पहनना छोड़ दें. शराब बन्द करने और छूतछात को मिटाने की कोशिश होने लगी और फूट दूर करने के लिये गांधीजी दौड़ धूप करने लगे.

"गांधीजी ने जो कुछ कहा था, वही किया और सरकार से कोई टक्कर न ली. फिर भी सरकार को डर था कि अगर कहीं हिन्दू, मुसलमान, सिख, पारसी और ईसाई एक ही झंडे के नीचे आ गये, तो बड़ी से बड़ी सरकार भी उनके सामने न जम सकेगी. यही कारन था कि कुछ सरकारी अफ़सरों ने गांधीजी की कोशिशों को मलियामेट करने के लिये हिन्दू, मुसलमानों, दोनों को बहकाना और उनमें फूट डलवाने की चालें चलनी शुरू कर दीं."

हरि—"अम्मा! पर हिन्दू और मुसलमान उन बुरे अफ़सरों के कहने में क्यों आ गये?"

११
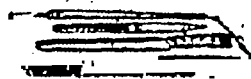
माँ—"बेटा हरि ! यह तो तुम जानते ही हो कि घृना और फूट का पाठ पढ़ना कितना आसान है और मेल मुहब्बत और प्रेम करना कितना कठिन . मूर्ख हिन्दू और मुसलमान भी अपने रास्ते से भटक गये और गांधीजी का प्रेम सन्देश भुलाकर एक दूसरे से लड़ने लगे और थोड़े ही दिनों में स्वतन्त्रता की मंज़िल आँखों से ओभल हो गई .

"हिन्दुओं और मुसलमानों को एक दूसरे का रक्त बहाते देख कर महात्माजी के दुख की कोई सीमा न रही . दिल्ली में जब हिन्दू और मुसलमानों में लड़ाई हुई, तब महात्माजी दिल्ली पहुँचे . वहाँ उन्होंने इक्कीस दिन का कठिन व्रत रक्खा . वह अपने व्रत से और दुआओं से लोगों के दिलों में एक दूसरे के लिये प्रेम पैदा करना चाहते थे .

"व्रत के ग्यारह दिन तो लोगों ने किसी न किसी तरह बिता दिये, पर बारहवें दिन डाक्टर ने कहा कि अगर गांधीजी अब अपना व्रत नहीं खोलेंगे तो उनकी जान का डर है . यह ख़बर सुनते ही सारे देश पर जैसे अंधेरा छा गया . सब मित्र और डाक्टर मिल कर गांधीजी पर दबाव डालने लगे कि वह व्रत खोल दें . उस रोज़ गांधीजी का मौन व्रत भी था . इसलिये उन्होंने एक परचे पर लिख दिया—'भगवान पर भरोसा रक्खो, प्रार्थना में बड़ी शक्ति है' . वह रात बड़ी भयानक रात थी, सब लोग सारे वक़्त जागते और प्रभु से गिड़गिड़ा गिड़गिड़ा कर महात्माजी की ज़िन्दगी के लिये भिक्षा माँगते रहे ."

हरि—"अम्मा ! तो क्या भगवान ने उनकी सुनली ?"

माँ—"हाँ ! उसने हमारी विनय सुनली और सवेरा होने पर समाचार मिला कि महात्माजी की तबियत पहले से बहुत अच्छी है . इकीस दिन पूरे होने पर जब गांधीजी ने अपना व्रत खोला, तो वह बहुत प्रसन्न दिखाई देते थे .

"उस दिन गांधीजी के सब मित्र सुबह चार बजे प्रार्थना के लिये उठे . दोपहर के बारह बजे गांधीजी अपना व्रत खोलने वाले थे . पहले कुरान पढ़ा गया, फिर एक ईसाई मित्र ने एक गीत गाया, फिर गीता पढ़ी गई, उसके बाद गांधीजी ने संतरे के रस से अपना व्रत खोला .

"सब हिन्दू और मुसलमान नेता, पंडित मोतीलाल नेहरू, देशबन्धु चितरंजन दास, मौलाना आज़ाद, मौलाना शौकत अली, डाक्टर अंसारी, मौलाना मोहम्मद अली, हकीम अजमल ख़ां और स्वामी श्रद्धानन्द जो वहाँ उपस्थित थे, उन्होंने वचन दिया कि वह हिन्दुओं और मुसलमानों को एक करने में कोई कसर उठा न रक्खेंगे . गांधीजी के व्रत के कारन बहुत दिनों तक हिन्दू और मुसलमान एक रहे .

"यह देख कर गांधीजी ने दूसरा काम हाथ में लिया और छूतछात दूर करने के प्रयत्न में लग गये . उन्हीं दिनों ट्रावंकोर के ब्राह्मन, हरिजनों को ख़ास ख़ास सड़कों पर चलने की आज्ञा नहीं देते थे . जब गांधीजी ने यह सुना तो वह तुरन्त ट्रावंकोर पहुँचे और उन्होंने अपने सत्याग्रह के पुराने हथियार को काम में लाकर, सब सड़कें हरिजनों के लिये खुलवादीं .

"उसी ज़माने में गुजरात के खेड़ा ज़िले में, किसानों और सरकार में लड़ाई छिड़ गई . जब गांधीजी को पता चला कि सरकार किसानों पर ज़ुल्म कर रही है तब उन्होंने सरदार वल्लभ भाई पटेल को, किसानों का नेता बनाकर भेजा . सरदार ने अपनी होशियारी और अनथक कोशिशों से सरकार के छक्के छुड़ा दिये और किसानों के लिये खेड़ा का मैदान जीत लिया .

"देश में अशान्ति बराबर बढ़ती जा रही थी . सारा देश महात्मा गांधी की जय जय कार से गूँज रहा था . हिन्दुस्तान को पूरी स्वतन्त्रता दिलवाने के लिये लोग जान देने और जेलों में जाने के लिये बेचैन थे .

"यों तो महात्मा गांधी ने सन् १९२१ ई० में ही तिरंगे झंडे को हमारा क़ौमी झंडा मान लिया था, पर सन् १९३० ई० में काँगरेस ने उसे अपना झंडा बना लिया .

"इस झंडे में सब से ऊपर का केसरी रंग बहादुरी का, बीच का सफ़ेद पवित्रता या पाकीज़गी का और नीचे का हरा रंग, सुख चैन और ख़ुशहाली का चिन्ह है . चर्ख़ा मेहनत मज़दूरी की इज़्ज़त करना सिखाता है . यह झंडा किसी अलग दीन धर्म का नहीं बल्कि सबका है . इस झंडे का आदर करना हर हिन्दुस्तानी का कर्तव्य है .

"देश निवासी आज़ादी पाने के लिये बेचैन थे मगर अंगरेज़ बार बार हमारी इस माँग को ठुकराते रहे . इसी कारन गांधीजी क़ानून तोड़ कर सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह करना चाहते थे . वह कोई ऐसा क़ानून तोड़ना चाहते थे जिसके तोड़ने से जनता का लाभ हो . नमक एक ऐसी चीज़ है जो अमीर ग़रीब सब के काम में आता है, और समुद्र के पानी से और बाज़ जगह की मिट्टी से भी, जो चाहे नमक बना सकता है . पर सरकार ने ऐसा क़ानून बना रक्खा था कि सिवाय सरकार के किसी और को नमक बनाने की आज्ञा नहीं थी और सरकार जितना चाहती उतना टैक्स वसूल करती थी . महात्मा जी का विचार था कि इस टैक्स का बोझ अमीरों से अधिक ग़रीबों पर पड़ता है . इसीलिये उन्होंने सबसे पहले नमक ही के क़ानून को तोड़ने की तैयारी की और गुजरात में डांडी जाकर, नमक बनाने का फ़ैसला किया . वहां सिधारने से पहले उहोंने व्रत रक्खा और उन्नासी साथियों को लेकर अपने साबरमती आश्रम से पैदल रवाना हुए . गांधीजी आगे आगे और उनके साथी, तीन तीन की क़तार में पीछे पीछे थे . हर एक सत्याग्रही के कन्धे पर एक लाठी में लटकी हुई एक छोटी सी गठरी थी . जहाँ जहाँ महात्माजी जाते वहाँ वहाँ लोग उनके दर्शन को आते . सड़कों पर छिड़काव करते तथा फूल और नारियल लाते . महात्माजी जगह जगह रुकते तक़रीरें करते, उपदेश देते बारह मार्च के चले हुए पाँच अप्रेल को डांडी पहुँचे . डांडी गुजरात की एक बन्दरगाह है जो अहमदाबाद से दो सौ मील पर है .

"जब महात्माजी ने क़ानून तोड़ कर नमक बनाया तो ऐसा मालूम हुआ कि देश भर सोते से जाग उठा . जगह जगह लोगों ने शान्ति के साथ क़ानून तोड़ कर नमक बनाना शुरू किया और सरकार ने उतनी ही कठोरता के साथ उन्हें दन्ड देना शुरू किया .

"चार मई की रात को एक बजे हथियारबन्द पुलिस ने आकर गांधीजी की झोंपड़ी को घेर लिया . गांधीजी और सब सत्याग्रही बे ख़बर सो रहे थे कि पुलिस का एक अंगरेज़ अफ़सर गांधीजी पर टार्च की रोशनी डालते हुए बोला, 'क्या आप ही मोहनदास करमचन्द गांधी हैं?' गांधीजी ने कहा—'क्या आप मुझे लेने आये हैं? ठहरिये, मैं अभी आता हूँ, ज़रा मुँह हाथ धोलूं तो आपके साथ चलता हूँ.' गांधीजी ने दाँत माँझे, मुँह धोया और पुलिस का अफ़सर उनकी गठरी हाथ में लिये खड़ा रहा . मुँह धो लेने के बाद गांधीजी ने कहा—'मेहरबानी करके मुझे चन्द मिनट प्रार्थना के लिये और दे दीजिये . फिर गांधीजी और उनके साथियों ने मिल कर भजन गाये और प्रार्थना

की . सबने एक एक करके हाथ जोड़ कर महात्माजी को प्रनाम किया . एक पुलिस वाले ने खद्दर के दो छोटे छोटे थैले उठाये, जिसमें गांधीजी की ज़रूरत की चीज़ें थीं . फिर आगे आगे वह और पीछे पीछे पुलिस वाले सब लारी में बैठ गये . यों रात में चोरों की तरह पुलिस वाले आये और हमारे गांधी बाबा को उठा कर ले गये ."
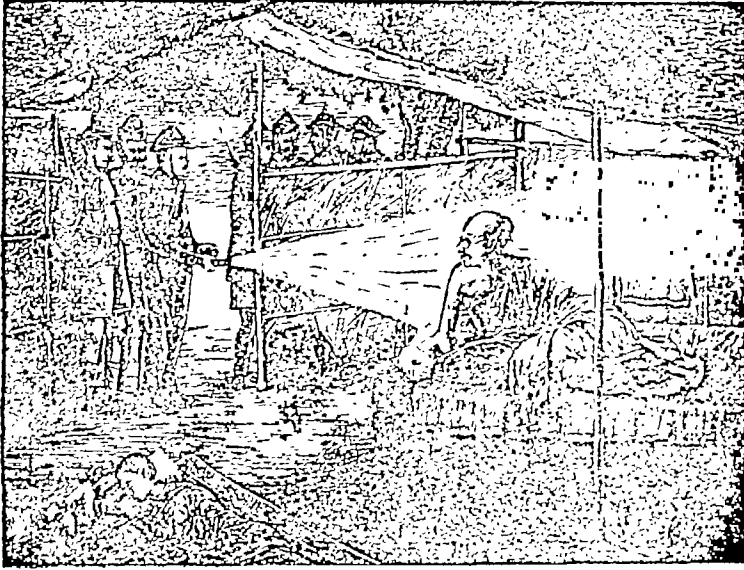
रात में पुलिस वाले गांधी को गिरफ़्तार करने आये हैं.

हरि—"तो उन्होंने शोर क्यों न मचा दिया, लोग आकर उन्हें पुलिस वालों के हाथ से छुड़ा लेते ?"

माँ—"बेटा ! तुम सुन चुके हो, वह कभी नहीं चाहते थे कि लोग पुलिस या सरकार के मुक़ाबले में हिंसा या ज़बरदस्ती से काम लें, और फिर ऐसी बात पूछते हो !"

हरि—"हाँ ! माताजी मैं भूल गया था . अच्छा तो फिर क्या हुआ ?"

१२
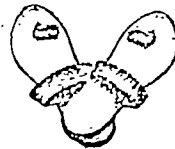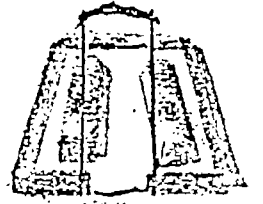
माँ—"आठ महीने तक बापू जेल में रहे. जब जेल से छूटे तो हिन्दुस्तान का नक़्शा बदल चुका था. गांधीजी का देश पर इतना असर हो चुका था कि अपने बल पर घमन्ड करने वाली अंगरेज़ सरकार को अहिंसा के पुजारी गांधीजी से समझौता करना पड़ा.

"इस समझौते के लिये विलायत में एक गोल मेज़ कानफ़रेन्स हुई. काँगरेस ने अपनी ओर से गांधीजी को अपना प्रतिनिधि बना कर कानफ़रेन्स में भेजा. चलते समय महात्माजी ने देश वालों से कहा—'मैं वचन देता हूँ कि तुमने मुझ पर जो भरोसा किया है उसको मैं झूठा नहीं होने दूंगा.'

"बारह सितम्बर को गांधीजी लंदन पहुँचे. वहां अख़बारों में उनकी बड़ी बड़ी तस्वीरें निकलीं. एक अख़बार ने एक मन गढ़ंत तस्वीर में दिखाया कि महात्माजी प्रिंस आफ़ वेल्स के पाँव छू रहे हैं. बापू इस चित्र को देख कर मुस्कराये और बोले—'मैं अपने देश के ग़रीब से ग़रीब भंगी के सामने झुकने को तैयार हूँ और मुझे उस अछूत के, जिसे हमने सदियों कुचला है, पाँव छूने में इनकार नहीं, पर इंगलिस्तान के राजकुमार के तो क्या, बादशाह के भी पाँव कभी नहीं छुऊंगा.'

"बापू ने गोल मेज़ कानफ़रेन्स में भाशन देते हुए कहा—'मैं किसी तरह भी हिन्दुस्तान में अंगरेज़ को ज़लील करना नहीं चाहता, हाँ! इतना ज़रूर चाहता हूँ कि इंगलिस्तान, हिन्दुस्तान को अपने बराबर का समझे और जो व्योहार, अपने बराबर वालों से किया जाता है, वह अंगरेज़, हिन्दुस्तानियों से करें.'

"कानफ़रेन्स जब समाप्त हुई तब बादशाह और मलका ने कांगरेस के सब मेम्बरों को महल में मिलने को बुलाया. और सब लोग तो बढ़िया बढ़िया सूट पहन कर गये पर बापू एक मामूली सा कम्बल ओढ़े, मामूली खद्दर की धोती पहने, चप्पल पाँव में डाले, इंगलिस्तान के बादशाह के शानदार महल में पहुँचे."

हरि—"माँ! उन्होंने बादशाह के महल में जाते समय भी अच्छे कपड़े नहीं पहने?"

माँ—"बात यह है कि हमारे ग़रीब देश के प्रतिनिधि को, ग़रीबों के से कपड़े ही सजते थे . जब वह वहां पहुँचे तो बादशाह और मलका देर तक महात्मा गांधी से बातें करते रहे ."

हरि—"सचमुच अम्मा !"

माँ—"इंगलिस्तान में बापू, एक ग़रीब अंगरेज़ औरत, मिस लिस्टर के घर मेहमान थे . वहां वह उसी ढंग से रहे जिस ढंग से हिन्दुस्तान में रहते थे . सुबह शाम प्रार्थना करते और रोज़ पैदल घूमने जाते . उनकी सादगी और प्रेम का परिणाम इंगलिस्तान के निर्धन लोगों के दिलों पर बहुत पड़ा और अभी तक बाक़ी है .

"जब कोई आदमी किसी नये शहर या देश में जाता है तब वहाँ के नामी आदमियों से मिलने, उनके घर अवश्य जाता है . इसी रीति के अनुसार बापू, मिस्टर चरचिल से मिलना चाहते थे, पर मिस्टर चरचिल ने हमारे बापू से मिलने से यह कह कर इनकार कर दिया कि 'मैं उस नंगे फ़क़ीर से उस समय तक मिलने को तैयार नहीं, जब तक वह ढंग के कपड़े पहन कर न आये .'

"बापू पर मिस्टर चरचिल की इस बदतमीज़ी का कुछ भी असर न हुआ, मगर हिन्दुस्तानियों का दिल मिस्टर चरचिल के इस उत्तर से बहुत दुखा .

"जब इंगलिस्तान और हिन्दुस्तान में कोई समझौता न हो सका, तो महात्माजी अपने देश को वापस लौटे . राह में वह इटली में रुके और वहाँ के डिक्टेटर मुसोलिनी से मिले, पोप का महल वेटिकन देखा और दिसम्बर के आख़ीर में बम्बई पहुँचे . उस समय देश में चारों ओर पकड़ धकड़ हो रही थी . सरकार हमारे सब बड़े बड़े नेताओं, जैसे पंडित जवाहर लाल, ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ और सरदार पटेल को पकड़ पकड़ कर जेलों में ठूंस रही थी . कुछ नहीं, तो नव्वे हज़ार आदमी उस समय तक क़ैद हो चुके थे . अंगरेज़ों की यह कोशिश थी कि किसी न किसी ढंग से काँगरेस को ख़त्म कर दिया जाये . पर लोगों पर इसका उल्टा ही असर हुआ . वह स्वराज की धुन में और पक्के होते गये . धीरे धीरे सरकार की ओर से सख़्तियाँ बढ़ती गईं और उसने महात्माजी को फिर पकड़ कर जेल में भेज दिया . सरकार का विचार था कि बापू को क़ैद में डाल कर वह सारे हिन्दुस्तान की हिम्मत तोड़ सकती है . भला यह कैसे हो सकता था, कि बापू का रौशन किया हुआ दिया, ऐसी आसानी से बुझ जाता . बापू के जेल चले जाने के बाद, देश की कठिनाइयाँ बढ़ती ही गईं . बापू क़ैद में, देश की विपता का हाल सुन सुन कर घुले जाते थे . अन्त में विवश होकर उन्होंने सरकार की सख़्तियों को रोकने के लिये मरन व्रत

रक्खा, तो सरकार ने उन्हें छोड़ दिया . उन्होंने बाहर आते ही सत्याग्रह रोक दिया और अछूतोद्धार के काम में लग गये ."

हरि—"अम्मा ! अछूतों को हरिजन क्यों कहते हैं ?"

माँ—"बेटा ! लोग जिन्हें अछूत समझते हैं वास्तव में वही तो हरि यानि भगवान् के बन्दों की सबसे अधिक सेवा करते हैं, इसीलिये वही भगवान् को सबसे बढ़कर प्यारे होने चाहिये . यह समझ कर ही बापू ने उन्हें हरिजन या भगवान् के प्यारे कहना शुरू कर दिया . यों उनका नाम हरिजन पड़ गया ."

१३
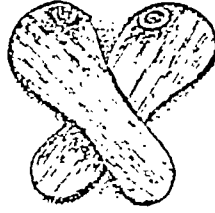
"तुम सुन चुके हो कि बापू बचपन ही से छूत छात को बुरा समझते थे. वह देश में इस बुरे रिवाज को देखते और दिल ही दिल में कुढ़ते थे. उनका कहना था कि सब आदमी बराबर हैं, किसी को यह अधिकार नहीं कि वह अपने आपको किसी दूसरे से ऊँचा समझे. भगवान् की दृष्टि में प्रत्येक मनुष्य अपने कामों के कारन अच्छा या बुरा होता है. जात पात सब मन गढ़ंत ढकोसले हैं.

"जो बात वह अपने देश वालों को बताना चाहते थे उसे कहते ही नहीं थे, करके भी दिखाया करते थे. उन्होंने वर्धा में एक आश्रम खोला जो 'सेवाग्राम आश्रम' के नाम से प्रसिद्ध हो गया. यहाँ हर जाति और धर्म के आदमी आकर रह सकते थे. आश्रम में रहने के लिये कुछ शर्तें थीं, जो हर आश्रम वाले को पूरी करना पड़ती थीं. हर एक को अपना सब काम अपने हाथ से करना पड़ता था जैसे चक्की पीसना, कपड़े धोना, खाना पकाना, झाड़ू देना, पाख़ाना साफ़ करना इत्यादि. गांधीजी और कस्तूरबा भी सब आश्रम वालों की तरह यह काम अपने हाथ से करते थे. सब आश्रम वालों के लिये एक ही स्थान पर खाना पकता और सब एक ही जगह बैठ कर खाना खाते थे. खाना शुरू करने से पहले सब भगवान् को स्मरण करते और 'शान्ति, शान्ति, शान्ति,' कह कर खाना शुरू कर देते.

"बापू की आदत थी कि जब तक रोज़ आश्रम का कोना कोना न देख लेते उन्हें चैन न आता था. यदि कहीं ज़रा सा भी कूड़ा करकट देखते, झट अपने आप उसे साफ़ करने लगते. आश्रम में कोई बीमार होता तो गांधीजी उसे ज़रूर जाकर देखते, उसे हँसा कर उसका दिल बहलाते. बीमारों की सेवा और इलाज करना भी ख़ूब जानते थे.

"एक बार का वृत्तान्त है कि आश्रम में एक मद्रासी लड़के को पेचिश हो गई. जब वह कुछ अच्छा हो गया तो लेटे लेटे एक दिन वह दक्खिन की मज़ेदार काफ़ी को याद कर रहा था. यों तो उसने, और सब आश्रम वालों की तरह मामूली उबला हुआ खाना, खाना सीख लिया था पर उसे काफ़ी सदा याद आती थी. काफ़ी, चाय और

पान की आश्रम में बन्दिश थी, तो फिर यह मद्रासी लड़का काफ़ी कैसे पी सकता था! वह अभी काफ़ी के ध्यान में ही था कि उसे महात्मा जी की खड़ाऊँ की खटपट सुनाई दी, और थोड़ी देर में बापू का मुस्कराता हुआ चेहरा दिखाई दिया . बापू उसके पलंग के पास आकर बोले, आज तो तुम पहले से बहुत अच्छे मालूम होते हो . अब तो तुम्हें भूख भी लगती होगी, कहो क्या खाओगे, दोसा खाने को तो जी नहीं चाहता?' गांधीजी जानते थे कि दक्खिन वालों को दोसे कितने पसन्द होते हैं ."

हरि—"अम्मा! दोसे क्या होते हैं?"

माँ—"यह एक प्रकार के नमकीन चीले होते हैं, जो केवल दक्खिन में बनते हैं . बापू के मुँह से खाने की बात सुन कर लड़के की आँखों में चमक आगई . वह हिचकिचाया और बोला, 'क्या मैं काफ़ी पी सकता हूँ?'

" 'अरे, पुराने पापी' बापू प्यार से हँस कर बोले—'अच्छा यह बात है, तो भाई तुम्हें काफ़ी ज़रूर मिलेगी, और हल्की काफ़ी तुम्हें फायदा भी देगी, पर काफ़ी के साथ खाओगे क्या? दोसे तो बन नहीं सकते, हाँ गर्म तोस और काफ़ी का भी जोड़ अच्छा है . मैं अभी भिजवाता हूँ .'

"यह कह कर बापू वहाँ से चले गये . लड़का हैरान था कि आश्रम में तो चाय, काफ़ी की इजाज़त नहीं, बापू कहीं भूले से तो नहीं कह गये . उसे विश्वास न आता था कि उसकी इतनी अच्छी क़िस्मत है, कि आश्रम में उसे काफ़ी पीने को मिले, और वह भी बापू के हाथ से .

"थोड़ी ही देर हुई होगी कि उसने फिर खड़ाऊँ की खटपट सुनी . बेचारे का दिल धक धक करने लगा . वह समझा बापू यह कहने आरहे हैं कि वह काफ़ी के लिये भूले से कह गये थे . आश्रम में काफ़ी नहीं मिल सकती . पर जब उसने देखा कि गांधीजी हाथ में खद्दर के रूमाल से ढकी हुई एक थाली लिये चले आ रहे हैं, तो उसकी आँखें खुली की खुली रह गईं . लड़के को थाली देते हुए बापू बोले, 'यह लो अपनी काफ़ी और तोस, देखना मैं अपने हाथ से बना कर लाया हूँ, और तुमसा दक्खिनी भी मान जायगा कि मैंने कैसी अच्छी काफ़ी बनाई है .'

" 'पर—पर' लड़का हकला हकला कर बोला—'आपने किसी और से क्यों न कह दिया, मेरे कारन आपको बहुत कष्ट हुआ .'

" 'बस, बस !' गांधीजी प्रेम से बोले, 'क्यों बेकार काफ़ी का मज़ा ख़राब करते हो . बा सो रही थीं, मैंने उन्हें जगाना ठीक न समझा . लो अब तुम काफ़ी पियो. मैं जाता हूँ . कोई आकर बरतन ले जायगा .' यह कहते हुए वह वहां से चले आये . काफ़ी बहुत अच्छी और हलकी बनी हुई थी . लड़के ने ख़ूब मज़े ले ले कर पी . काफ़ी क्या थी, बापू के हाथ का दिया अमृत था ."

हरि—"अम्मा ! जब आश्रम में काफ़ी और चाय कोई पीता ही न था, तो फिर इतनी जल्दी काफ़ी आ कहाँ से गई ?"

माँ—"बात यह थी कि श्री राजगोपालाचार्य और मिस्टर एंड्रयूज़ गांधीजी के पास आते रहते थे . और उनके लिये कस्तूरबा के पास यह चीज़ें रक्खी रहती थीं .

"बापू के पास सेवाग्राम में तरह तरह के लोग आते थे . कोई अपने बीमार बच्चे को इलाज के लिये लाता, कभी पति पत्नी बापू से अपना झगड़ा चुकवाने आते, कोई उन से ज़मीन का झगड़ा तय कराने आता . एक बार एक साहब आये जो कुछ पागल से लगते थे . मालूम हुआ कि बड़े पढ़े लिखे आदमी हैं . किसी कालेज में प्रोफ़ेसर थे, फिर कई बार जेल की हवा खाई और आख़िर में जोगी हो गये . उन्होंने अठवारों व्रत रक्खे, फिर एक दिन संसार के सब काम धन्दे छोड़ कर, जंगल की राह ली . बरसों नंगे फिरते रहे . कई बरस चुप साधे रहे, यहाँ तक कि अपने होंठ तांबे के तार से सी लिये और कच्चा आटा और नीम के पत्ते खा कर पेट भरा करते .

"फिरते फिरते सेवाग्राम आश्रम आ निकले और महात्माजी से मिले . बापू ने बड़े प्रेम से उन साधू जी की देख-भाल की और उन्हें आदमियों की दुनिया में खेंच लाये .

"पहले पहल तो वह काम करने से घबराया करते थे पर धीरे धीरे वह दिन भर में लगातार सत्रह घन्टे काम करने लगे . आठ दस घन्टे चर्खा कातते और सात आठ घन्टे आश्रम में लोगों को पढ़ाते थे . जो आदमी कभी मुँह सी कर फिरा करता था अब उसके ठट्ठों से आश्रम गूंज उठता . अब तो वह एक छोटी सी धोती भी लपेट लेते थे . पर इसके सिवाय कोई और सामान अपने पास नहीं रखते थे . जहाँ साँप बिच्छू रेंग रहे हों वहाँ वह बेधड़क चले जाते थे . हां, कभी कभी जब उन्हें ललक उठती थी तो घबराये हुए महात्माजी के पास आकर उनसे कुएँ में उलटा लटकने की आज्ञा मांगते पर ईश्वर की कृपा है कि बापू का कहा उनके लिये पत्थर की लकीर बन गया था, इसलिये वह कभी अपनी मनमानी न कर पाते थे .

"उन दिनों बापू आश्रम में बैठे देश से छूत-छात, जात-पात और मूढ़ता को दूर करने में लगे हुए थे . उन्होंने चर्खा संघ, तालीमी संघ और गो सेवा संघ बनाये . वह चाहते थे कि हिन्दुस्तान का हर गाँव वाला अपने शेष समय में हाथ पर हाथ धर कर न बैठा रहे, खेती के काम के अतिरिक्त कुछ और भी कमा सके . चर्खा काते, निवाड़ बुने या कोई और हाथ का काम सीखे और साथ साथ पढ़ना लिखना भी सीखे . यही सब चीज़ें थीं, जिन का प्रचार करके बापू आम गाँव वालों को स्वतन्त्रता के लिये तैयार कर रहे थे . केवल अंगरेज़ की गुलामी से आज़ादी नहीं, बल्कि ग़रीबी, बीमारी, मूढ़ता सब से आज़ादी दिलाना चाहते थे . इन सब चीज़ों का आपस में सम्बन्ध है, इसलिये इन में से कोई एक न हो, तो सब बेकार है . क्यों हरि, क्या तुम्हें नींद आरही है ? तुम थक तो नहीं गये ? बस अब थोड़ी सी कहानी और रह गई है, कहो तो पूरी करदूं, नहीं तो फिर कल सुन लेना ."

हरि—"नहीं अम्मा ! मुझे नींद नहीं आरही है, बड़े ध्यान से सुन रहा हूँ . बिना सारी कहानी सुने, जी नहीं मानेगा, आप सुनाइये ."
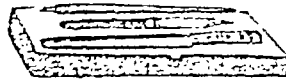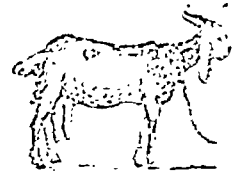
मां—"हिन्दुस्तान वालों के दिलों पर गांधीजी का प्रभाव अंगरेज़ सरकार के प्रभाव से कहीं बढ़ चढ़ कर था . कुछ सूबों में उनके ही साथी कांगरेसियों ने हकूमत की कुरसियाँ संभाल रक्खी थीं . अंगरेज़ को देश की बदली हुई दशा एक आँख न भाती थी, जनता का बढ़ता हुआ जोश उन्हें कुछ बेबस किये दे रहा था .

"हमारे नेताओं को हकूमत की बाग डोर हाथ में लिये, थोड़े ही दिन बीते थे कि इंगलिस्तान और जर्मनी में लड़ाई छिड़ गई . यह दुनिया की दूसरी बड़ी लड़ाई थी . हिन्दुस्तान में अंगरेज़ों ने हमारे नेताओं से पूछे बिना ही हमारे देश का माल और सिपाही लड़ाई में जर्मनी के विरुद्ध भेजने शुरू कर दिये . लोगों को इस बात से बहुत दुख हुआ . काँगरेसी नेताओं ने फ़ौरन गांधीजी के कहने पर हकूमत की कुरसियाँ छोड़ दीं . गांधीजी का विचार था कि जब इतने बड़े मामले में हमारे नेताओं की परवाह न की गई तो उनका कुरसियों पर रहना बेकार है .

"बापू को आश्रम में बैठे बैठे दुनिया भर की सब ख़बरें मिलती रहती थीं . वह जानते थे कि मुल्कों मुल्कों में लड़ाई होने से क्या क्या बरबादी होती है . उन्होंने जर्मनी के डिक्टेटर हिटलर को एक चिट्ठी लिखी . उस चिट्ठी में उन्होंने लिखा कि यों तो मैं संसार में किसी को अपना शत्रु नहीं समझता पर एक तरह तुम और मैं आजकल एक ही दुशमन यानी अंगरेज़ से लड़ रहे हैं . क्या ही अच्छा हो कि तुम भी मेरी तरह अहिंसा के हथियार से अंगरेज़ से लड़ो . क्योंकि हिंसा की लड़ाई में दुनिया की बरबादी है और यदि अहिंसा के हथियार के विशय में तुम कुछ जानना चाहते हो तो तुम्हारी फ़ौज में एक मामूली सिपाही है जो मेरे आश्रम में रह चुका है, तुम उससे मालूम कर सकते हो . इस समय, एक तुम ही हिंसा की लड़ाई को रोक सकते हो .' यह पत्र गांधीजी ने वायसराय के द्वारा भेजना चाहा पर वायसराय ने इसकी आज्ञा न दी . अगर वायसराय ने इस पत्र को जाने दिया होता और हिटलर महात्माजी की बात मान लेता, तो दुनिया इस तरह नश्ट न होती . पर वहाँ तो अंगरेज़ों को और हिटलर को अपने अपने बल पर घमन्ड था .

"उन्हीं दिनों महात्माजी ने कई बार प्रयत्न किया कि अंगरेज़ हमें शान्ति से आज़ादी दे दें . पर हर बार वह नाकाम रहे . महात्माजी लड़ कर और लहू बहा कर आज़ादी लेने को तैयार न थे . अगर वह चाहते तो सारे देश को सरकार से लड़ने के लिये मैदान में लाकर खड़ा कर सकते थे . पर अहिंसा के पुजारी को यह बात मंज़ूर न थी . उन्होंने सरकार से लड़ाई जारी रखने का एक नया ढंग निकाला, और बहुत से लोगों को मिल कर सत्याग्रह करना, बन्द करके, एक एक को सत्याग्रह के लिये भेजा . यह ऐसे लोग थे जो अहिंसा के नियमों को अच्छी तरह समझते थे और उन पर अमल करते थे . सब से पहले बापू ने श्री विनोबा भावे को चुना . जब वह पकड़े गये तो सरकार ने सैकड़ों देश भक्तों को, घर बैठे बिठाये पकड़ लिया . पंडित जवाहर लाल नेहरू को भी चार साल के लिये जेल भेज दिया . पर थोड़े ही दिन में हिन्दुस्तानियों के जोश और बेचैनी से घबरा कर अंगरेज़ सरकार ने हमारे सब लोगों को छोड़ दिया .

"योरप की लड़ाई अभी ज़ोरों पर थी कि ख़बर आई, जापान ने अमरीका पर हमला बोल दिया और हिन्दुस्तान की ओर बढ़ कर रंगून पर क़ब्ज़ा कर लिया . रंगून पर जापानी झंडे का लहराना था कि हमको शत्रु द्वार पर दिखाई देने लगा . सारे देश में बेचैनी फैल गई और लोग तरह तरह से सोचने लगे . कोई कहता था कि अमरीका और जापान की लड़ाई में हम घुन की तरह पिस जायेंगे, कोई चाहता था कि जापानी बर्मा से बढ़ कर हिन्दुस्तान से अंगरेज़ों को निकाल दें . मतलब यह, कि लोग आज़ाद होने के लिये एकबार फिर रस्सियां तुड़ाने लगे .

"जब अंगरेज़ों ने मुल्क में इतनी अधिक बेचैनी देखी तो उन्होंने लन्दन से मिस्टर क्रिप्स को भेजा कि वह दिल्ली जाकर हिन्दुस्तान और इंगलिस्तान में समझौता करायें . अंधेरे में आशा की हलकी सी किरन दिखाई दी, लोग समझे अब शायद स्वतन्त्रता मिल जाये पर ऐसा न हुआ . जो शर्तें क्रिप्स लाये थे वह हमारे नेताओं को पसंद न आईं और जो हमारे नेता चाहते थे, वह अंगरेज़ देने को तैयार न थे . अन्त में क्रिप्स जैसे आये थे वैसे ही लौट गये . गांधीजी और दूसरे नेताओं ने तय किया कि जब तक देश आज़ाद न होगा योरप की लड़ाई में अंगरेज़ को मदद न देंगे .

"बापू ने देखा कि योरप की लड़ाई की आग और जापान के युद्ध की लपटें हमें भस्म किये डालती हैं और केवल हिन्दुस्तानियों की मर्ज़ी के विरुद्ध उनका धन, दौलत और युवा सन्तान लड़ाई में काम आरही है, तो उनको बड़ा दुख हुआ . उन्होंने सब नेताओं को इकट्ठा किया और उनसे कहा कि जब तक हम अंगरेज़ के बस में हैं, अंगरेज़ इसी तरह हमारा रक्त चूसते रहेंगे . आओ, हम मिल कर अंगरेज़ को अपने देश से निकाल दें .

पर हमने अंगरेज़ से हिंसा की लड़ाई लड़ कर उसे निकाला, तो क्या निकाला . हम को तो एक दिल और एक ज़ुबान होकर बस इतना कहना चाहिये, कि 'हिन्द छोड़ दो', 'हिन्द छोड़ दो' . गांधीजी के मुंह से इतनी बात का निकलना था कि चालीस करोड़ ज़बानों से 'अंगरेज़ो, हिन्द छोड़ दो' की पुकार सारे देश में गूंज उठी . अंगरेज़ों को अपने घरों के बाहर, सड़कों पर, दफ़्तरों की मेज़ पर, मोटर पर, यहां तक कि हर जगह, 'हिन्द छोड़ दो' लिखा हुआ दिखाई देने लगा और वह समझ गये कि अब सचमुच हिन्दुस्तान छोड़ने का समय आ गया है .

"महात्माजी ने साथ ही साथ वायसराय को एक पत्र लिखा कि अगर अंगरेज़ हिन्दुस्तान को आज़ाद कर दें, तो हिन्दुस्तानी, युद्ध में अंगरेज़ों की मदद करेंगे . यदि अंगरेज़ इस समय भी उन्हें आज़ादी नहीं देंगे, तो फिर हिन्दुस्तानी अपनी जान पर खेल कर आज़ादी लेने पर मजबूर हो जायेंगे . यह टक्कर बड़ी कठोर होगी, पर होगी अहिंसा के ढंग पर ."

हरि—"अम्मा ! वायसराय ने बापू के पत्र का क्या उत्तर दिया ?"

मां—"महात्माजी को इस पत्र का उत्तर तो वायसराय क्या देते, उन्होंने आव देखा न ताव, हमारे सब बड़े बड़े नेताओं और काम करने वालों को फिर जेलों में बन्द कर दिया .

"बापू और कस्तूरबा को लेजाकर पूना में आग़ा ख़ां के महल में नज़रबन्द कर दिया . वहीं गांधीजी के कुछ साथी, जैसे सरोजिनी नायडू, सुशीला नैयर और महादेव देसाई भी रक्खे गये ."
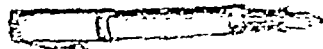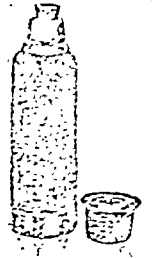
हरि—"महल में तो बापू बड़े आराम से रहते होंगे ?"

मां—"नहीं बेटा, वह दुखियों का सहारा, ग़रीबों के दिल का उजाला, हिन्दुस्तान की नैया का बूढ़ा खेवनहार, हमारा ग़रीब और दुखियारा बापू हम सब से अलग रह कर भला क्या आराम पाता ! उस शानदार महल में उन्हें कैसे सुख मिल सकता था ! वहाँ की ऊँची ऊँची दीवारें उन्हें खाने को दौड़ती थीं . ग़रीबों से अलग रह कर संसार की कोई चीज़ बापू को अच्छी न लगती थी .

"वह महल में भी सरल ढंग से रहते थे . सुबह सवेरे उठते, प्रार्थना करते, फिर थोड़ा फलों का रस पीते और काम में लग जाते . सब साथी एक जगह बैठ कर खाना खाते . बुलबुले हिन्द, सरोजिनी नायडू तरह तरह के चुटकलों से बापू का दिल बहलातीं . शाम को फिर प्रार्थना होती, जिस के बाद दोबारा काम शुरू हो जाता . सारा दिन काम करने के बाद रात को सब जल्दी ही सो जाते थे .

"अभी महात्माजी को नज़रबन्द हुए कुछ ही दिन हुए थे कि उनके प्यारे और पुराने साथी, महादेव देसाई दिल की धड़कन बन्द हो जाने से, यकायक परलोक सिधार गये . महादेव भाई और गांधीजी का साथ, तीस बरस का था . बापू उन्हें अपने बेटे की तरह चाहते थे . महादेव भाई ने भी अपना जीवन बापू और देश के लिये त्याग दिया था . दोनों एक दूसरे के दुख सुख के साथी थे . बापू उनसे अपने हृदय की सब बातें किया करते और वह सदा बापू को सच्ची और खरी राय देते थे .

"महादेव भाई के मृत शरीर को बापू ने अपने हाथों से नहलाया, अर्थी तैयार की और बाप की तरह सब संस्कार किये . महल में बाग़ के एक कोने में चिता को आग दी गई और वहीं उनकी समाधि बनी . जब तक बापू महल में रहे रोज़ उस समाधि पर फूल चढ़ाने जाया करते थे .

"गांधीजी के नज़रबन्द होने के बाद जब देश में कोई बड़ा नेता न रहा जो जनता को शान्त रखता, तो लोग जोश में आकर जिस तरह जिसकी समझ में आया, सरकार से लड़ते रहे . कुछ जोशीले लोग गांधीजी का अहिंसा का सबक़ भूल गये, और छुप छुप कर

लोगों को अंगरेज़ों से हिंसा की लड़ाई लड़वाने लगे. सरकार ने भी लोगों को दबाने के लिये गोलियां बरसाईं. गांव के गांव जला कर राख कर दिये. हज़ारों औरतें, मर्द और बच्चे मारे गये, हज़ारों जेलों में ठूंस दिये गये. और इस देश की बे सरदार सेना, रास्ते से भटक गई.

"बापू ने सोचा भी न था कि आज़ादी की लड़ाई उनके जाते जी इतना भयानक रूप धारन कर लेगी और जोशीले लोग उनकी ललकार के ग़लत माने समझ कर अपने आपको इस तरह जोखिम में डाल लेंगे.

"जेल में बापू को पल पल की ख़बरें पहुँच रही थीं. तन तो उनका अवश्य जेल में था पर मन हमारे साथ था. और कैसे न होता, आख़िर वह हम सबके बाप थे. अपने बच्चों को ठीक रास्ते से भटकता हुआ देख कर, उनका दिल ख़ून हो रहा था.

"सरकार ने मार-पीट और हिंसा का सारा दोश, ज़बरदस्ती बापू के कंधों पर डाल दिया. गांधीजी ने बहुत चाहा कि सरकार कुछ नेताओं को छोड़ दे कि वह लोगों को समझा बुझा कर मार धाड़ से रोकें और अहिंसा के नियम उन्हें याद दिलायें. पर सरकार इस बात पर किसी तरह तैयार न हुई. जब बापू ने देखा कि सरकार उनकी बात सुनने को किसी तरह तैयार नहीं, तो लाचार होकर उन्होंने दस फ़रवरी सन् १९४३ ई० को इक्कीस दिन का व्रत शुरू किया, जिससे वह संसार को अपने निर्दोश होने का यक़ीन दिलायें.

"व्रत के इक्कीस दिन के लिये सरकार बापू को छोड़ देना चाहती थी, पर बापू ने इस बात को स्वीकार न किया. कस्तूरबा हर समय गांधीजी की सेवा में लगी रहतीं. गांधीजी दिन पर दिन कमज़ोर होते जा रहे थे. सारे देश पर एक एक दिन भारी था, सब की आँखें और कान आग़ा ख़ां महल की ओर लगे हुए थे. लोग हड़तालें कर रहे थे और दुआयें माँग रहे थे, देहली में सरकार के तीन हिन्दुस्तानी वज़ीर हकूमत से अलग हो गये, पर सरकार टस से मस न हुई. राम राम करके इक्कीस दिन पूरे हुए और तीन मार्च को गांधी बाबा ने अपना व्रत खोला और कस्तूरबा के हाथ से संतरे का रस पिया. मीरा बेन ने ईसाई धर्म के भजन गाये. मुसलमानों ने क़ुरान पढ़ा, पारसियों, हिन्दुओं और बौद्धों ने अपने अपने धर्म की किताबें पढ़ कर बापू को सुनाईं.

"जब बापू ने अपना व्रत खोला तो हिन्दुस्तानियों की जान में जान आई. इस व्रत से सारा देश एक आवाज़ होकर 'महात्मा गांधी की जय' और 'इनक़लाब जिन्दाबाद' पुकार उठा.

"बापू के भाग्य में अभी और दुख लिखे थे . उनके प्यारे साथी महादेव देसाई के मरने का ग़म अभी हरा ही था, कि कस्तूरबा बीमार हो गईं . सबने बहुत कोशिश की कि वह क़ैद में न रहें बल्कि अपने घर वापस चली जायें पर बाह-री हिम्मत, उन्होंने गांधीजी का साथ न छोड़ा . शायद उनके दिल को ख़बर हो गई थी कि उनका समय आ पहुंचा है, इसलिये वह अपने पति को छोड़ने के लिये तैयार न हुईं . कस्तूरबा की तबियत बिगड़ती ही गई और वह अटल घड़ी आन पहुँची, जब गांधीजी और कस्तूरबा का साठ साल का साथ छूट गया और वह भगवान् को प्यारी हो गईं ."

हरि—"अम्मा, गांधीजी, बा के मरने पर बहुत रोये होंगे ?"

माँ—"बेटा, ऐसी बेबसी में अगर यह मुसीबत किसी और पर पड़ती, तो न जाने उसका क्या हाल होता, पर गांधीजी उस समय भी भगवान् की ओर ध्यान लगाये रहे और बराबर अपने देश वालों के लिये दुआयें मांगते रहे .

"महादेव देसाई की समाधि के पास ही गांधीजी ने बा की समाधि बना दी . जब तक गांधीजी आग़ा ख़ां महल में नज़रबन्द रहे, प्रतिदिन दोनों समाधियों पर फूल चढ़ाने और प्रार्थना करने जाया करते थे . अब भी हर इतवार को पूना के और बाहर के भी, बहुत से लोग आग़ा ख़ां महल में यात्रा को जाते हैं .

"बापू की अकेली जान और चारों तरफ़ दुखों का घेरा, आख़िर बेचारे कब तक सहते . कमज़ोर होते होते बहुत बीमार हो गये . सरकार ने उनको जब अधिक बीमार देखा तो अपना कल्यान इसी में समझा कि गांधीजी को छोड़ दें . ६ मई को उसने गांधीजी को बिना किसी शर्त के छोड़ दिया और उनके साथ ही उनके साथियों को भी रिहा कर दिया . आग़ा ख़ां महल छोड़ने से पहले जब अन्तिम बार, बापू समाधियों पर फूल चढ़ाने गये तो कोई ऐसा न था जिसकी आँखों से आँसुओं की धारा न बह रही हो ."

हरि—"माताजी, यह तो मुझे भी याद है कि जब बापू के छूटने की ख़बर आई तो हमारे घर में बड़ी ख़ुशी मनाई गई थी ."

माँ—"हाँ बेटा, एक हमारे ही घर में क्या, सारे देश के घर घर में ख़ुशी के चिराग़ जलाये गये ."

१६
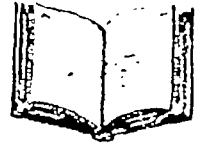
"बापू के जेल से निकलते ही हिन्दुस्तानियों के अंधेरे और उदास दिलों में फिर उजाला हो गया, सबको ऐसा मालूम हुआ कि उनके दुख के बटाने वाला आ गया. कुछ दिन तक तो गांधीजी पूना और जूहू में रहे कि उनके कमज़ोर शरीर में कुछ जान आ जाये. जब उनमें ताक़त आ गई, तो वह पूरी हिम्मत से कमर बाँध कर स्वतन्त्रता के युद्ध के सेनापति बन कर खड़े हो गये. उन्होंने लोगों को उनकी भूल चूक दिखा दिखा कर समझाया और सरकार को भी उसकी ग़लतियाँ जताईं. उन्होंने एक बार फिर प्रयत्न किया कि अंगरेज़ हिन्दुस्तान का राज हिन्दुस्तानियों को सौंप दे, पर अंगरेज़ हिन्दुस्तान छोड़ने को तैयार न थे. वह बार बार यही शर्त लगाते कि हिन्दू और मुसलमान सब मिल कर आज़ाद हिन्दुस्तान की हकूमत संभालें, तो हम आज़ादी देने को तैयार हैं. महात्माजी कहते कि मुसलमान और हिन्दू एक ही देश वासी हैं, यह हमारा घरेलू मामला है, आज़ाद होने के बाद हम आपस में तय कर लेंगे कि इस मुल्क में हम कैसे अंगरेज़ को हमारे घरेलू मामले में दख़ल नहीं देना चाहिये, पर उस समय तो बिलकुल वही कथा थी जो तुमने सुनी होगी. एक बार दो बिल्लियों में एक डबल रोटी पर लड़ाई हुई, तो उन्होंने एक बन्दर को न्याय करने के लिये बुलाया कि वह रोटी के टुकड़े बराबर तौल कर बांट दे. बन्दर था बड़ा चालाक, जो टुकड़ा भारी निकलता उसमें से बड़ा सा निवाला खा लेता तो वह बहुत हल्का हो जाता, फिर वह बराबर करने के लिये दूसरे टुकड़े पर लपकता और उसमें से भी इतना अधिक उड़ा जाता कि सब वह पलड़ा हल्का हो जाता, सारांश इसी बहाने वह सारी रोटी खाकर चलता बना. मूर्ख बिल्लियाँ एक दूसरे का मुँह देखती की देखती रह गईं.

"इसी तरह जब हिन्दू और मुसलमान आपस में लड़ते लड़ते मरे जा रहे थे तो हकूमत के चौधरियों ने कहा, 'आओ हम तुम्हारे देश को दो भागों में बाँट दें—एक हिन्दुस्तान और दूसरा पाकिस्तान.' हमारे नेता तैयार हो गये कि किसी भाव सही, आज़ादी तो मिले. उन्हें क्या मालूम था कि यह बँटवारा ही घृना और फूट के बीज बो देगा.

"देश के हर कोने से हृदय हिला देने वाले समाचार आने लगे. पंजाब में कुछ गड़बड़ सी हो रही थी कि कलकत्ते से ख़बर आई कि वहाँ मुसलमान और हिन्दू आपस में लड़ पड़े. भाई भाई का शत्रु बन बैठा है. गांधीजी बेचैन हो गये, और कलकत्ते पहुँचे. जो सुना था वह बिलकुल सच निकला. हिन्दू और मुसलमान जो सैकड़ों साल से एक जगह रहते और एक साथ बैठते उठते आये थे, एक दूसरे के रक्त के प्यासे हो गये. बापू ने पहुँचते ही कलकत्ते के मैदान में एक जलसा किया. कहाँ तो मुसलमान और हिन्दू एक दूसरे की सूरत देखना न चाहते थे, और कहाँ सब लाखों की गिनती में बापू की बात सुनने जमा हो गये. बापू ने उन सब को प्रेम का सन्देश सुनाया और थोड़ी ही देर के अन्दर

हिन्दू-मुसलमान बापू के पास हथियार जमा कर रहे हैं.

घृना की कालिख दिलों से धुल गई. बापू ने अब चाहा कि हिन्दू और मुसलमानों ने जो हथियार जमा कर रक्खे हैं वह लाकर बापू को दे दें. जब लोगों ने ऐसा न किया तो बापू को ख़याल हुआ कि अभी एक आँच की कसर बाकी है. दिल का कुन्दन अभी दमका नहीं. इसके लिये उन्होंने व्रत रक्खा. जब बंगाल के लोगों ने बापू के व्रत की ख़बर सुनी, तो सैकड़ों नौजवानों ने हज़ारों की गिनती में हथियार ला ला कर बापू के क़दमों में डाल दिये और सौगन्धें खाईं कि अब हम आपस में कभी नहीं लड़ेंगे, और सच-मुच जो कहा था वह कर दिखाया.

"घृना की चिंगारियाँ अभी बिलकुल बुझी न थीं. बापू मुल्क के एक भाग में शान्ति कराते तो किसी दूसरी जगह आग भड़क उठती. उन्हीं दिनों पूर्वी बंगाल में

नोआखाली से सूचना आई कि मुसलमान हिन्दुओं के घर लूट रहे हैं और उनको मार रहे हैं . यह सुनते ही दुबला पतला बूढ़ा बापू, अपनी जान हथेली पर रख कर चला और नोआखाली के एक एक गाँव में प्रेम का सन्देश लेकर पहुँचा . वह अक्सर पैदल दौरा

बापू पूरबी बंगाल में अपनी राह पर अकेले-अटल.

करते, और कहीं कहीं तो नंगे पाँव जाते थे . नोआखाली में गाँव वालों के यहाँ खाना खाते, वहीं उठते बैठते और आराम करते थे . वह लोगों को बुला बुला कर समझाते, उनसे छीनी हुई चीज़ें असली मालिक को वापिस दिलवाते . लोगों को नये सिरे से उनके घरों में बसाते और बिछड़े हुओं को फिर मिलवाते थे .

"नोआखाली के बाद बिहार की बारी आई . ख़बर मिली कि बिहार में हिन्दुओं ने मुसलमानों के गांव के गांव साफ़ कर दिये . बिहार की विपता सुनकर बापू तड़प गये,

और बिहार पहुँचे . वही अपना प्रेम का सन्देश वहां भी दोहराया, कि किसी की जान लेना बड़ा पाप है . हिन्दू मुसलमान, सब हिन्दुस्तानी हैं, एक हैं, सैकड़ों वर्षों से

बापू शाम को टहलने जा रहे हैं.

साथ रहते आये हैं और दोनों को यहीं रहना है, फिर लड़ झगड़ कर पाप के गढ़े में क्यों गिरें !

"पहले पहले तो उन लोगों ने गांधीजी की बातों पर कान न धरे, पर धीरे धीरे सच की धीमी आवाज़ का प्रभाव उन पर होने लगा . वह उस भयानक स्वपन से चौंके, उनको याद आ गया कि वह भेड़िये नहीं, मनुष्य हैं . अपने किये पर पछताये और शान्ति और अमन रखने की सौगन्ध खाई .

"उन झगड़ों में हमारे बापू को आराम का विचार न था, न खाने पीने की सुध, न कड़ाके की सरदी की परवाह, न लू के थपेड़ों की फ़िक्र, वह कभी नोआखाली में नंगे पाँव चलते हुये नज़र आते, तो कभी बिहारियों के घायल दिलों पर मरहम रखते

बापू नोआखाली में.

हुये दिखाई देते . हिम्मत थी कि हार न मानती थी, और ईमान था, कि कठिन मुसीबतें झेल झेल कर और निखरता जा रहा था .

"अन्त में वह दिन आन पहुंचा जब भारत आज़ाद हुआ और चारों ओर प्रसन्नता की एक लहर दौड़ गई . पर स्वतन्त्रता के उजाले के साथ साथ मार धाड़ और पाप के काले बादल भी चारों तरफ़ उमड़ आये . इधर दिल्ली में जब मनुष्य जोश में

आकर, माउन्ट बेटन की जय पुकार रहे थे तो उधर बंगाल में कुछ लोग हमारे गांधी बाबा पर पत्थर बरसा रहे थे . मूढ़ता, फ़िरका परस्ती और पाप के घुप अंधेरे में हम रास्ते से भटक गये . प्रेम के सारे बन्धन टूट गये, भाई भाई का शत्रु हो गया . ऐसा लगता था कि मनुश्य ने भेड़िये का रूप रख लिया है . हिन्दू, मुसलमान के रक्त का प्यासा था और मुसलमान, हिन्दू की जान का शत्रु . उस भयानक समय में केवल दो चार रोशनियाँ दिखाई देती थीं, जो अपनी पूरी शक्ति से पाप के अंधेरे में उजाला करने का प्रयत्न कर रही थीं ."

हरि—"मां, यह कैसी रोशनियां थीं ?"

मां—"यह थे हमारे बापू और उनके साथी . पर हमने उनकी ओर से आँखें फेर रक्खी थीं . हर ओर से मारो,-मारो की आवाज़ें आ रही थीं ."

हरि—"अम्मा, 'मारो, मारो,' कौन कह रहा था ?"

मां—"बेटा, यह फ़सादी हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख थे, जो एक दूसरे को खाये जा रहे थे . बुरे लोग जो ऐसे अवसरों की खोज में रहते हैं, उन सब ने वह मार धाड़ की, बे गुनाहों पर वह अत्याचार किये कि सारा संसार हमारे पागलपन पर दाँतों तले उंगली दबा कर रह गया ."

"हरि को यह बातें सुन कर बहुत दुख हुआ, वह सोच में पड़ गया, फिर बोला—"अम्मा ! हिन्दू, मुसलमानों और सिक्खों को ऐसी बुरी बुरी बातें करते हुये देख कर, बापू को तो बड़ा दुख होता होगा ?"

आज़ाद भारत का तिरंगा झंडा

मां—"हाँ बेटा, वह बहुत कुढ़ते थे और दुखी हो कर बार बार कहते—'हे भगवान मुझ से यह मार-पीट और अत्याचार नहीं देखे जाते, अब तुम मुझे इस संसार से उठालो .'
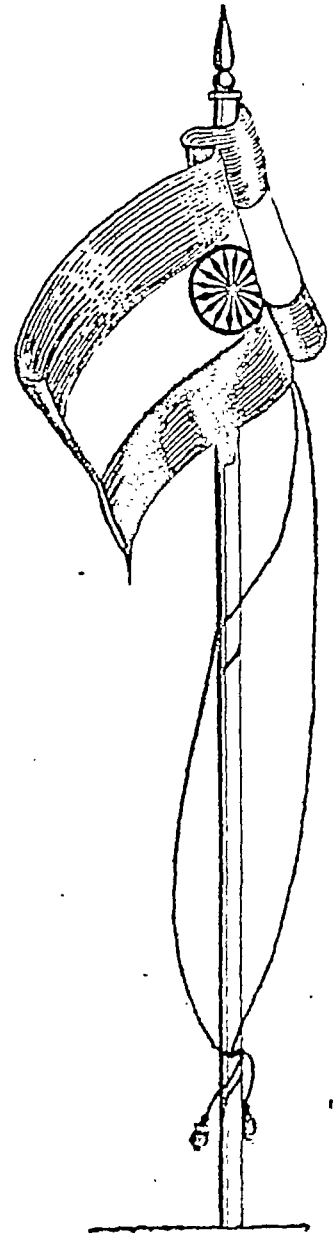
"नोआखाली और बिहार का झगड़ा निपटा कर वह पंजाब जा रहे थे कि दिल्ली में मार धाड़ शुरू हो गई . यह तो तुम्हारे सामने की बात है, कैसे भयानक दिन थे वे ! बापू दिल्ली पहुंचे तो दिल न माना, यहीं रुक गये कि पहले राजधानी को बचायें और उसके बाद आगे बढ़ें . यहां उन्होंने देखा कि लाखों की गिनती में लुटे हुये लोग पंजाब से आकर देहली में फैल गये हैं . देहली में मार काट, कहते हैं, इन्हीं चोट खाये हुये लोगों के कारन हुई . बापू को इन दुखियारों से पूरी सहानुभूती थी, पर वह यह भी जानते थे कि यदि मामला एक बार दिल्ली सरकार के हाथ से निकल गया तो दिल्ली की आग सारे हिन्दुस्तान को भस्म कर देगी ."

हरि—"फिर बापू ने क्या किया ?"

मां—"बापू ने बड़ी शान्ति से बैठ कर सोचा कि क्या करना चाहिये . फिर उन्होंने दिल्ली के बड़े बड़े अफ़सरों को बुलाया और समझाया, कि वह हिन्दू मुसलमान सब को एक निगाह से देखें और सावधान और होशियार होकर काम करें . दूसरी ओर शरनार्थियों के पास जाकर उन्हें दिलासा दिया और समझाया कि दिल्ली के मुसलमानों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है . जिन मुसलमानों ने तुम्हें, तुम्हारे घरों से निकाला है और तुम्हें दुख पहुँचाया है, वह और लोग हैं, और ये और हैं . उन लोगों का बदला तुम इन लोगों से नहीं ले सकते . फिर मुसलमानों को समझाया कि अपने लुटे हुये पंजाबी और सिंधी भाईयों की हर तरह मदद करो . बापू अच्छी तरह जानते थे कि यदि बदला लेने का सिलसिला चला तो इसे रोकना कठिन होगा . लोगों से कहते—'भगवान के लिये समझ और सब्र से काम लो, अपने ऊपर और एक दूसरे पर दया करो .'

"जब गांधीजी ने देखा कि लोगों की सचमुच मति उलट गई है, क्रोध ने उनकी अक़्लों और आंखों पर परदा डाल दिया है, तो बापू ने ब्रत रक्खा और कहा कि मैं अपनी जान देकर हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख सब को एक करके रहूँगा . देहली में उन दिनों बड़ी हलचल थी . लोगों की समझ में न आता था कि क्या करें और क्या न करें . आख़िरकार सब धर्मों के नेता इकट्ठे हो कर बापू के पास पहुंचे और उन्होंने सौगन्ध खाई कि हम अपनी जान पर खेल जायेंगे, पर दिल्ली में झगड़ा न होने देंगे . जब गांधीजी को भरोसा हो गया कि यह लोग जो कहते हैं वह अवश्य करेंगे, तो उन्होंने अपना ब्रत खोल दिया, और दिल्ली की दशा उसी दिन से सुधरने लगी ."

हरि—"जिस दिन बापू ने अपना ब्रत खोला, तो मां, लोग कितने प्रसन्न थे, ऐसा मालूम होता था कि सारी दिल्ली में विवाह रचा हुआ है !"

मां—"ठीक कह रहे हो . नेक और अच्छे लोगों पर तो बापू के व्रत का बहुत अच्छा प्रभाव था और वह फूले नहीं समाते थे . पर ऐसे लोग भी थे जिन को बापू का हिन्दू मुसलिम एकता का काम, एक आँख न भाता था . वह समझते थे कि गांधीजी का यह प्रयत्न, हमें निर्बल कर देगा . उन लोगों का विचार था कि वीर बनने के लिये लाठी का उत्तर लाठी से और गोली का उत्तर गोली से देना चाहिये . बुराई का बदला भलाई से देना कमज़ोरी और बोदापन है . ऐसे लोग यह भी जानते थे कि जब तक बापू जीवित हैं और उनके शरीर में श्वास बाक़ी है, वह हिन्दू-मुसलिम-सिक्ख एकता के लिये अपना रक्त पसीना, एक करते रहेंगे . बापू के जीते जी उन लोगों की बात पर कोई कान नहीं धरेगा, इसलिये ले दे कर ऐसे लोगों के पास एक ही उपाय था, वह यह, कि बापू को मार डालें .

"बापू की आदत थी कि रात का खाना वह दिन से ही खा लेते और ठीक पाँच बजे प्रार्थना सभा में पहुँच जाते . वहाँ लोग पहले से उनके प्रतीक्षा में जमा रहते थे . जब
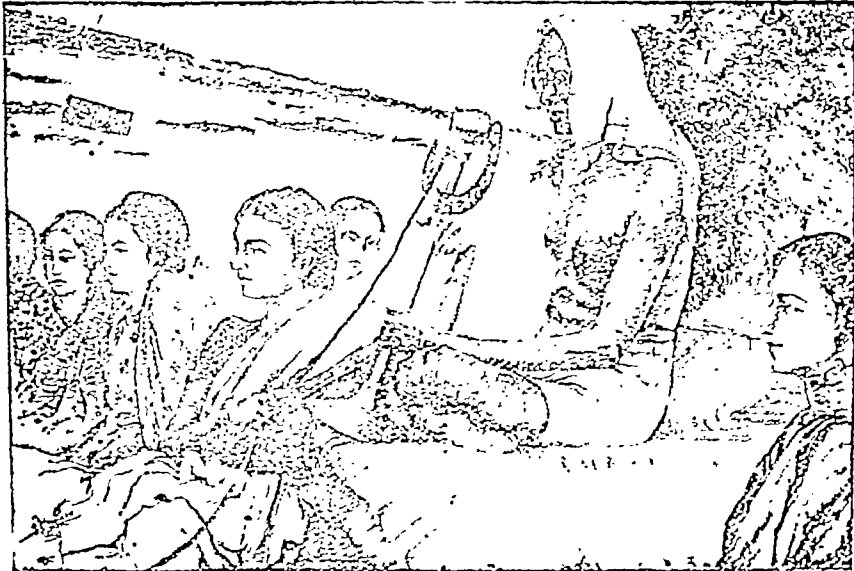
बापू दिल्ली में शाम की प्रार्थना के बाद बोल रहे हैं.

बापू लोगों के बीच से जाते तो कोई उनको झुक कर नमस्कार करता, कोई आदाब करता और कोई उनके पांव छूता . बापू जाकर एक नीचे से तख़्त पर बैठ जाते, क़ुरान और गीता पढ़ने वाले उनके पास ही बैठते और वहीं भजन गाने वाले भी होते थे . प्रार्थना शुरू होती, तो सब से पहले क़ुरान में से कुछ आयतें पढ़ी जातीं, फिर गीता का पाठ होता, भजन गाये

जाते और अन्त में बापू, लोगों को कुछ उपदेश देते . उस समय की हालत और ऊँच नीच समझाते . प्रार्थना सभा में एक भजन रोज़ गाया जाता था जो बापू को बहुत रुचिकर था .

'ईश्वर अल्लाह तेरे नाम, सबको सम्मति दे भगवान .'

"इसी तरह के और कई भजन थे जो उनकी प्रार्थना सभा में गाये जाते थे .

"गांधीजी की प्रार्थना सभा में, दूर दूर से लोग आते और सब हिन्दू और मुसलमान अछूत और ब्राह्मन एक ही जगह बैठ कर अपने प्रभु का समरन करते ."

हरि—"अम्मा, प्रार्थना सभा में तो मैं भी गया था, मैं जानता हूँ वहाँ क्या क्या होता था, पर यह समझ में नहीं आया कि बापू गीता के साथ साथ क़ुरान और बाईबिल क्यों पढ़वाते थे ?"

मां—"बेटा ! बापू कहते थे कि सब धर्म सच्चे हैं और सब धर्मों की पुस्तकें भगवान की भेजी हुई हैं, और सब सचाई का रास्ता बताती हैं . वह यह भी कहते थे, कि मैं हिन्दू भी हूँ और मुसलमान भी, सिक्ख भी हूँ और ईसाई भी, यह सब मेरे धर्म हैं ; क्योंकि सब धर्मों की जड़, नेकी और सचाई है .

"हाँ, तो मैं तुम्हें आज की बात सुना रही थी . बापू जल्दी जल्दी क़दम उठाते हुए प्रार्थना सभा में पहुँचे क्योंकि आज उन्हें कुछ देर हो गई थी . अभी वह भीड़ में से निकल ही रहे थे कि एक निर्दयी पांव छूने के बहाने से आगे बढ़ा और उसने बापू को गोलियों का निशाना बना कर मार डाला . कैसा पत्थर का दिल होगा उस पापी का, जिसका हाथ बापू पर उठ सका .

"अरे ! तुम रो रहे हो हरि ! धीरज रक्खो, गांधीजी ने भगवान की राह में अपनी जान दी है . ऐसे लोग मरते नहीं, हमेशा जीवित रहते हैं . तुम देखोगे कि अन्त में जीत उन्हीं की होगी . बापू की जीत सच की जीत है . और सच की जीत भारतवर्ष की जीत, पर इसके लिये बच्चों और बूढ़ों, स्त्री और पुरुषों सब को अनथक काम करना चाहिये . हमें गांधीजी के बताये हुये रास्ते पर केवल आप ही नहीं चलना बल्कि अपने साथियों

को भी चलाना है. यह वही रास्ता है जो तीस वर्ष से गांधीजी हमें दिखा रहे थे. यह सच, प्रेम और अहिंसा का रास्ता है. जो लोग भटक कर फूट, घृना और अहिंसा की पगडंडियों पर पड़ चुके हैं उन लोगों को हाथ पकड़ पकड़ कर ठीक रास्ते पर लाना है.
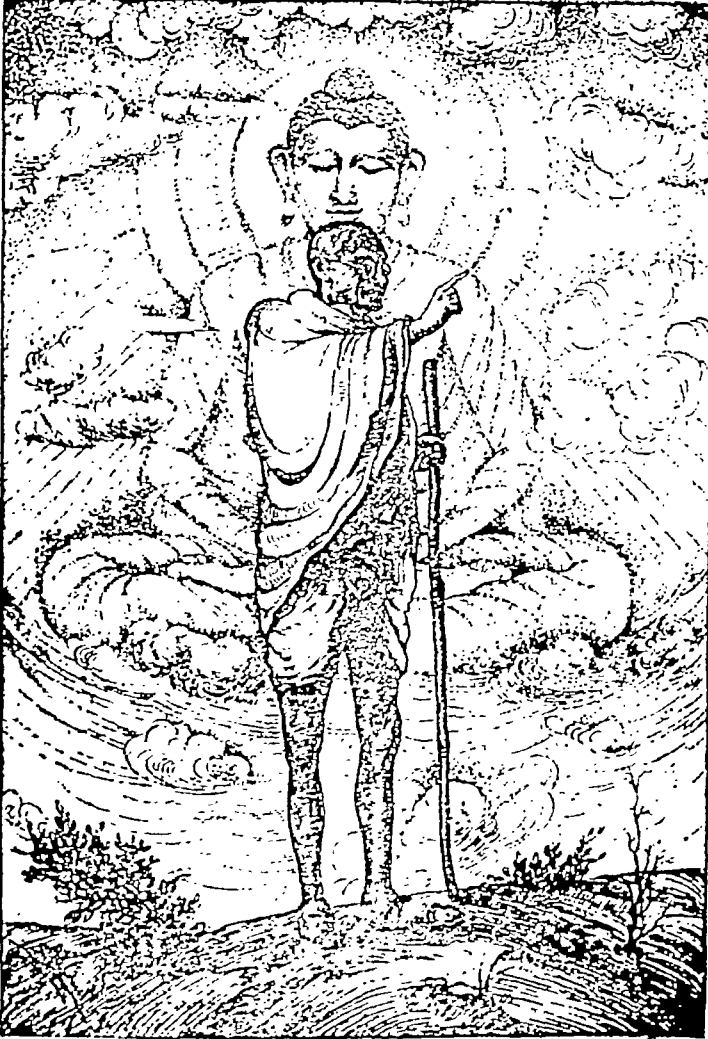
हमारे अमर पथ-प्रदर्शक—बापू!

"हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिये कि हम केवल हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख या ईसाई हैं, बल्कि सदा स्मरन रखना चाहिये कि हम हिन्दुस्तानी हैं, और सच्चे हिन्दुस्तानी. हम सबको हिन्दू-मुसलिम एकता के लिये काम करना है. हिन्दुस्तान और पाकिस्तान, दोनों को यह उपदेश देना है कि सब जातियाँ एक हैं. क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या सिक्ख सब को भगवान ने बनाया है और सबको आपस में प्रेम से रहना है."

हरि—"अम्मा ! सच्चा हिन्दुस्तानी बनने के लिये मुझे क्या करना चाहिये ?"

मां—"बेटा ! इसके लिये हमें बापू के बताये हुए रास्ते पर चलना चाहिये . हमें हिन्दुस्तान को ऐसा देश बनाना है, जहाँ निर्धनता और दुख न हो, जहाँ ज़बरदस्त का ठेंगा कमज़ोर के सिर पर न हो, जहाँ अमीर ग़रीब और हिन्दू मुसलमान का प्रश्न न हो, सब बराबर हों, कोई किसी पर अत्याचार न कर सके, सब पढ़े लिखे और ख़ुशहाल हों . पर इन वस्तुओं को पाने के लिये सचाई, बलिदान, त्याग और परिश्रम आवश्यक हैं . हम सब इस काम में लग जायें तो बापू की आत्मा को बहुत शान्ति मिलेगी . यह अवश्य नहीं कि हर बार हमारा परिश्रम फल ही लाये, पर इस से निराश हो कर कन्धा डाल देना, बापू के चेलों का काम नहीं . उनके सच्चे चेले तो परिनाम की परवाह किये बिना, दिन रात नेक काम करने की धुन में लगे रहते हैं और यही वास्तविक सेवा है ."

"माताजी, अभी गांधी बाबा की कहानी सुना ही रही थीं कि दादा जी रेडियो पर पंडित जवाहर लाल और सरदार पटेल के भाशन सुन कर आये और कहने लगे—

"बेचारे पंडित जी पर तो ऐसा मालूम होता है कि ग़म के पहाड़ टूट पड़े हैं . उन्होंने ने बड़ी भर्राई हुई आवाज़ में रेडियो पर कहा—'दोस्तों और साथियों, रोशनी गुल हो गई और हमारी ज़िन्दगियों पर अंधेरा छा गया . मैं तुम से क्या कहूँ, और कैसे कहूँ, कि हमारा नेता, हमारा बापू और इस देश का बाप, चल बसा . देश में विष फैला हुआ है और इसी ज़हर ने लोगों के दिमाग़ों में भी विष भर दिया है . हमें चाहिये कि हम शान्ति और हिम्मत के साथ इस विष के वृक्ष को उखाड़ फेंके . हमें बड़ी मुसीबतों का सामना करना है मगर उसी ढंग से जो हमारे बापू ने हमें सिखाया है . कल का सारा दिन व्रत और प्रार्थना में बिताना चाहिये . कल चार बजे गांधीजी की चिता जलाई जायेगी . आओ, हम सब अपने बापू की तरह अपने जीवन को इस देश के लिये त्याग दें .'

"इसके बाद सरदार पटेल बोले, उन पर भी गांधीजी की मौत का बड़ा प्रभाव था . उन्होंने कहा—'मैं तुम से क्या कहूँ कि क्या हुआ, पर जो कुछ हुआ, वह बड़े दुख और शरम की बात है . गांधीजी कुछ दिनों से देश की हालत से असन्तुष्ट थे . इसीलिये उन्होंने व्रत रक्खा था . अब जो कुछ भी हुआ हमें इसका रंज तो अवश्य करना चाहिये पर क्रोध नहीं, ग़ुस्से में यह डर है कि हम कहीं उनका दिया हुआ उपदेश भूल न जायें . आओ, हम वह कर दिखायें जो हमसे बापू के जीवन में न हो सका . नहीं तो हमारे नामों पर यह धब्बा लग जायेगा कि हम बापू की नसीहत पर अमल न कर सके . आज की

दुख भरी घटना, ईश्वर करे, हमारे नवजवानों को जगा कर उन्हें उनका असली धर्म और फ़र्ज़ समझा सके . दिल छोड़ने की कोई बात नहीं, हमें मिल कर गांधीजी के शुरू किये हुए काम को समाप्त करना है .'

"तुम रो रही हो, हरि की मां !" दादा जी बोले—"रोने से कोई काम सफल नहीं होता, यह रोने और सिर धुनने का समय नहीं . इस घड़ी सब हिन्दुस्तानी सीना तान कर खड़े हो जायें और गांधीजी के शत्रुओं से कहें—'आओ, हम हैं बापू की निशानी, हम हैं उनके सैनिक, आओ, मैदान में उतरो, हम सच्चाई का झंडा, अहिंसा की ढाल और आत्म शक्ति की तलवार ले कर रक्त बहाये बिना मैदान जीतेंगे, हमारी जीत अटल है .'

"आओ, सब हिन्दुस्तानी उठें, अपने आंसू पोछ डालें और नई आशाओं के साथ आगे बढ़ें . आओ, हम बापू की दी हुई शक्ति और जलाल से काम लें और संसार को सच्चाई का युद्ध जीत कर दिखादें और दुनिया को बतला दें, बापू क्या थे और क्या चाहते थे ."

१०९

समाप्त